चन्दामामा
सितम्बर १९८२

# जीवन और हनु आश्चर्य चकित

# घोड़े की समझ पर

'क्लेवर हंस' एक ऐसा घोड़ा था जो 20 वीं शताब्दी के शुरू-शुरू में हुआ था। वह पढ़ ही नहीं, गणित के सवाल भी हल कर लेता था और दुनिया भर के राजनैतिक सवालों के जवाब भी दे सकता था।

गणित के सवाल पूछे जाने पर (जैसे 3 और 4 कितने होते हैं) हंस जवाब में अपने पैरों से थाप देता था (इस सम्बन्ध में, सात बार)।

गणित के अलावा अन्य प्रश्नों (जैसे 'क्या लन्दन ब्रिटेन की राजधानी है'?) के जवाब वह सिर हिला या घुमाकर देता था। वह ब्लैक बोर्ड पर लिखे सवालों के जवाब भी दे देता था।

अन्त में हंस का भेद खुल ही गया। वह सदा अपने आस-पास खड़े

लोगों, विशेषतया अपने स्वामी आस्टेन के हाव-भावों को ध्यान से देखता रहता था। गणित का सवाल पूछे-जाने पर, पब्लिक हंस के पैरों की तरफ देखने लगती...

सो वह थाप देना शुरू कर देता था। जवाब के अनुसार जब वह थाप लगा लेता तो लोगों में किसी ने किसी तरह की प्रतिक्रिया होती थी। वह या तो सिर हिलाने, चैन की सांस लेने या मुस्काराने लगते थे। हंस उस समय थाप लगाना बन्द कर देता था।

इसी तरह, अन्य किस्म के सवालों के लिए भी वह कोई न कोई इशारा पा ही जाता था। यह उसने कैसे सीखा, यह कोई नहीं जान सका।

आश्चर्य की बात तो यह है, घोड़े की तरकीब जान जाने के बाद भी, लोगों के लाख प्रयत्न करने पर भी कि वह हल्के सा हल्का इशारा भी न दें, वह कोई न कोई इशारा पा ही जाता था।

जीवन बीमा—आपके भविष्य की सुरक्षा का सबसे सुरक्षित उपाय. इसके बारे में अधिक जानिए.

## भारतीय जीवन बीमा निगम

पल पल छलके फ्लैश ताज़गी!
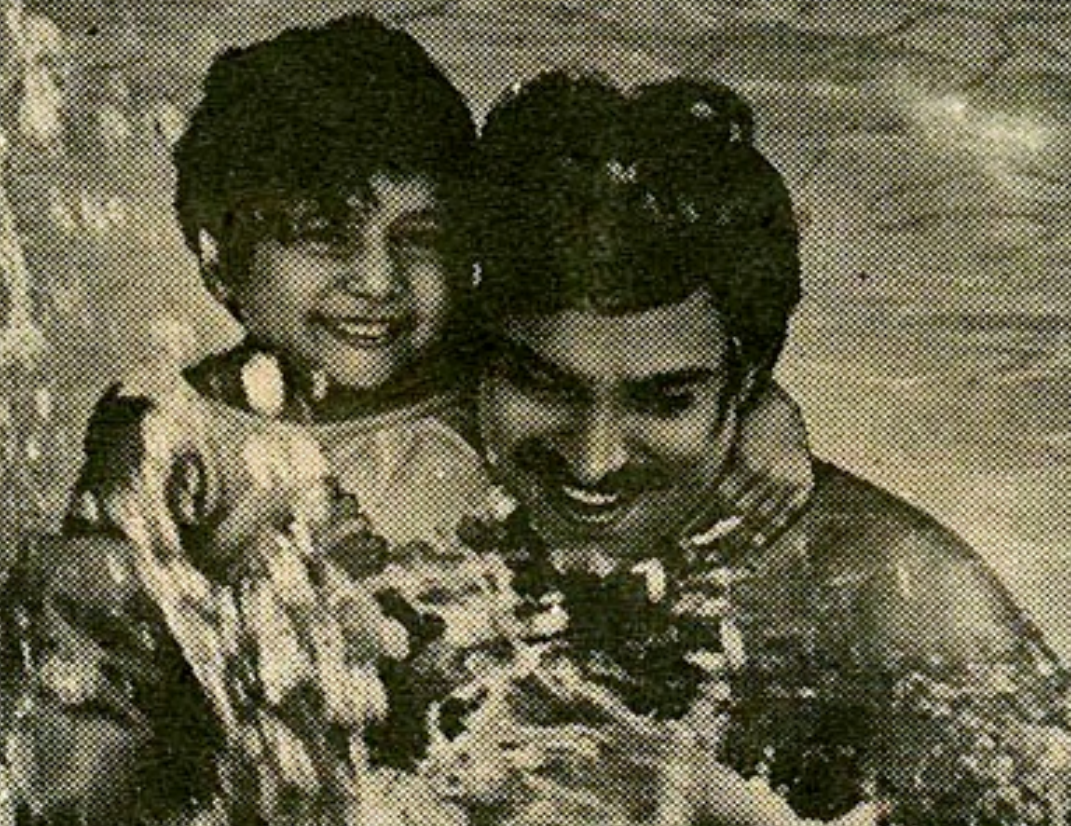
# चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख़ से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे। आपके सहयोग की आशा है।

**डाल्टन एजन्सीस, मद्रास-६०० ०२६**

# चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने से हम 'अरब कहानियाँ' शीर्षक के अंतर्गत नयी नयी कहानियाँ शुरू कर रहे हैं। ये कहानियाँ अनेक रोचक घटनाओं से भरी पड़ी हैं। आशा है, हमारे पाठकों का मनोरंजन में ये कहानियाँ भी सफल सिद्ध होंगी।

## अमर वाणी

**गंगा पापं शशी तापं, दैन्यं कल्पतरुस्तथा ।**
**पापं तापं च दैन्यं च, हंति सज्जन संगतिः ॥**

[कहा जाता है कि गंगानदी पाप को, चन्द्रमा ताप को, कल्प वृक्ष दीनता को दूरकर सकते हैं; लेकिन सज्जनों की मैत्री पाप, ताप और दीनता तीनों को एक साथ दूर कर सकती है।]

वर्ष : ३५ सितंबर १९८२ अंक : १

एक प्रति : १-७५ :: वार्षिक चन्दा : २१-००

# अक्लमंद चोर

एक दिन शाम को तीन चोर अपने चुराये हुए धन और गहनों के साथ एक जंगल में पहुँचे। वहाँ पर एक उजड़े हुए मंदिर की मूर्ति के पीछे सारा धन छिपाया और निडर होकर मण्डप में बैठकर बातचीत करने लगे।

बातचीत के सिलसिले में बड़े चोर के दिमाग में एक अनोखा उपाय सूझा। उसने बाक़ी दोनों चोरों से कहा–"दोस्तो, तुम दोनों मेरी बातों को सावधानी से सुन लो। हमने इस वक़्त जो धन छिपाया है, उसे हम तीनों आपस में बराबर बांट ले तो हम में से किसी की भी गरीबी पूरी तौर पर दूर न होगी। ऐसा न होकर हम में से कोई एक पूरे धन को ले ले तो वह आगे इस ख़तरनाक पेशे को छोड़ मजे से जी सकता है। तुम लोगों का क्या विचार है?"

इस सुझाव को बाक़ी दोनों चोरों ने मान लिया। लेकिन उनके सामने यह सवाल पैदा हुआ कि चुराया गया धन कौन ले? इसका निर्णय कैसे करे?

बड़ा चोर थोड़ी देर तक सोचता रहा, तब बोला–"मुझे एक उपाय सूझ रहा है। सवेरा होने के पहले हम में से जो हमारे छिपाये गये धन के जरिये करोड़पति बन जाने का सपना देखे, उसी को हम यह सारा धन दे देंगे।"

बाक़ी दोनों चोरों ने इसे मान लिया। इसके बाद सब लोग सो गये, मगर किसी को भी नींद न आई। इस बीच सवेरे अपने साथियों को सुनाने के लिए सब से बड़े चोर ने दिमाग खपाकर एक सपना सोच लिया और आराम से सो गया। दूसरे ने भी अपने मन में कोई सपना गढ़ लिया और सो गया।

रघुनाथ वर्मा

तीसरे ने एक योजना बनाई, बाक़ी दोनों चोरों के सो जाने तक वह इंतज़ार करता रहा, उनके सोने के बाद धन की थैली लेकर नजदीक़ के एक बरगद के पास पहुँचा, उसके खोखले में थैली छिपाकर लौटकर लेट गया।

सवेरा होने पर तीनों चोर जाग उठे। सब से पहले बड़े चोर ने अपना सपना यों सुनाया–"मैं चोरी के माल को लेकर एक ऐसे राज्य में पहुँचा, जिसका नाम तक हमने कभी न सुना था। उस राज्य में जहाँ भी देखो, दूर तक हरी-भरी फ़सल फैली हुई है। लेकिन पूछ-ताछ करने पर मालूम हुआ कि उस राज्य में सब कहीं चोरों का बोलबाला है। इसलिए मैंने सोचा कि सारा धन कहीं छिपा कर कोई व्यापार शुरू कर दूं? मगर बद क़िस्मती से उसी रात को मेरा सारा धन चोरों ने लूट लिया।

मेरे दुख की कोई सीमा न रही। उसी वक़्त मैंने उस देश के राजा के पास जाकर शिकायत की। राजा भी बड़े दुखी हुए और बोले–"बेटा, तुम कोई परदेशी मालूम होते हो। मैंने इस बात का ढिंढ़ोरा पिटवाया है कि जो आदमी हमारे देश के डाकू व लुटेरो को पकडवा देगा, उसे मैं अपनी राजकुमारी के साथ आधा राज्य भी दे दूंगा। लेकिन आज तक कोई भी आदमी डाकू व लुटेरों को पकड़ नहीं पाया।"

राजकुमारी के साथ आधा राज्य पाने की बात सुनते ही मेरे भीतर उत्साह उमड़ पड़ा। मैंने राजा से कहा–"महाराज, आप चिंता न कीजिए, मैं उन सारे डाकुओं को बन्दी बना सकता हूँ।"

यह कहावत यूँ ही चल नहीं पड़ी है कि चोर को पकड़ने केलिए चोर ही होना चाहिए। मैंने बहुत जल्द सारे डाकू और लुटेरों को पकड कर राजा के हाथ सौंप दिया। राजा ने अपने वचन के मुताबिक़ मेरे साथ राजकुमारी की शादी

करके मुझे आधा राज्य दे दिया। इस तरह हमने जो धन छिपाया, उसकी मदद से मैं एक करोड़पति ही नहीं, बल्कि एक पूरे देश का राजा भी बन सका। यह सब चोरी के माल का जादू है।"

इस पर दूसरे चोर ने पहले चोर के सपने की तारीफ़ करते हुए कहा–"भाई, तुम्हारा सपना एक प्रकार से अच्छा ही कहा जा सकता है, लेकिन यह कोई ऐसा बढ़िया सपना नहीं है। अब मेरा सपना सुन लो।" इन शब्दों के साथ दूसरे चोर ने अपना सपना सुनाना शुरू किया–"मैं चोरों के धन व गहने लेकर पूरब के टापुओं में व्यापार करने केलिए जहाज़ पर चल पड़ा। वह जहाज़ एक भयंकर तूफान में फंस कर डूब गया। मैं चोरी के माल के साथ नागलोक में पहुँचा। वहाँ पर तरह-तरह के हीरे, मानिक आदि रत्न देखकर मेरी आँखें चौधिया गईं। मगर अचरज की बात यह है कि नागलोक के निवासी गहनों की नक्काशी देख विस्मय में आ गये। नागलोक की युवरानी नागदेवी ने सारे गहने मुझ से माँगे। उस वक़्त मेरी बुद्धि ने बड़ी तेजी के साथ काम किया। मैंने गहने युवरानी नागदेवी को न देकर उसकी सखियों को कुछ गहने भेंट किया। नागदेवी अपनी सखियों को सुंदर गहने पहने देख ईर्ष्या से भर उठी और वह मुझ से बिनती करने लगी–"हे परदेशी, तुम जो भी चीज़ माँगो, मैं तुम्हें दे दूँगी, लेकिन बचे हुए वे सारे गहने मेहर्बानी करके मुझे दे दो।"

मैं नागदेवी के मुँह से ये ही बातें सुनने के इंतज़ार में था, मैंने उससे कहा–"नागदेवी, मैं अपनी जन्मभूमि को छोड़ कई तरह की यातनाएँ झेलकर तुम्हारे साथ शादी करने के ख़्याल से यहाँ आया हूँ। ये सारे गहने तुम्हारे वास्ते लाया हूँ, ले लो।" यों कहकर मैंने सारे गहने उसे दे दिये।

नागदेवी ने मान लिया और उसी वक़्त मेरे साथ बड़े ही वैभवपूर्वक शादी कर ली।

इस प्रकार हमने जो धन छिपाया था, उसकी मदद से मैं नागलोक की युवरानी के साथ शादी करके सारे नागलोक का राजा बन बैठा ।"

दोनों चोरों के सपने सुनने के बाद तीसरा चोर चितापूर्ण चेहरा बना कर बोला–" तुम दोनों के सपनों के सामने मेरा सपना कोई खास मतलब नहीं रखता । तुम दोनों अच्छी तरह से कान खोल कर मेरा सपना सुन लो । हमने जो धन छिपाया, उसे ले जाकर व्यापार करके न केवल मैं एक करोड़पति बना, बल्कि एक करोड़पति की बेटी के साथ मैंने शादी भी कर ली । लेकिन जब हमारी गृहस्थी सुखपूर्वक चल रही थी, तब बीच में कोई भयंकर आवाज़ हुई, जिससे मेरा सपना टूट गया और मैंने आँखें खोलीं ।

मैंने देखा कि चार चोर नक़ाब डाले मूर्ति के पीछे हमारे छिपाये गये धन को लूटकर मंदिर से भाग रहे हैं । मैं उसी वक़्त बड़े भाई को थपकी देकर जगाते हुए चिल्ला उठा–" चोर, डाकू हैं ।" लेकिन बड़े भाई आँखें खोले बिना बोल उठे– "मेरे राज्य के अंदर चोर और डाकू ? मैंने तो उन्हें कभी के खतम कर डाले ।" यों कहते वे करवट बदल कर फ़िर सो गये ।

उस वक़्त मैंने छोटे भाई के कंधे पर थपकी देकर उन्हें सारी बातें सुनाईं । छोटे भाई भी आंखें खोले बिना बोले–" नागदेवी, मैं जिस नागलोक का राजा हूँ, इस

राज्य में कहीं चोर हो सकते हैं ? अहहह ।" इस बीच नक़ाबधारी चोर हमारा धन लेकर जंगल में भाग गये ।"

तीसरे चोर का सपना सुनकर बाक़ी दोनों चोर घबरा कर मंदिर की ओर भाग खड़े हुए। मूर्ति के पीछे धन को ढूँढा, पर वहाँ धन न था।

वे गुस्से में छोटे चोर के पास लौट आये और पूछा—"तुम सच बताओ, चोरों का आना और तुम्हारे द्वारा हमें जगाने की बात कहना—यह सब सफ़ेद झूठ है।"

मगर छोटा चोर थोड़ा भी विचलित हुए बिना बोला—"मेरी बातों में झूठ की कोई बात नहीं है। हमारी बद क़िस्मती यह थी कि उस वक़्त आप दोनों राज्य के कामों में एक दम डूबे हुए थे।"

यह जवाब सुनकर बाक़ी दोनों चोर बिगड़ कर बोले—"अबे, असली बात यह है कि हमने कोई सपना नहीं देखा है। सोने के पहले ये सपने हमने अपने मन में गढ़ लिये हैं। बस, यही बात। अब भी सही तुम सच्ची बात बतला दो। उस धन को तुमने कहाँ पर छिपा रखा है ? वरना बहुत बुरा होगा।"

इस पर छोटा चोर टहाके मार कर हँस पड़ा और बोला—"तब तो हमने जैसे सोचा था, उसके अनुसार मेरा सपना ही बड़ा है। क्योंकि तुम दोनों ने कोई सपना ही नहीं देखा। इसलिए सारा धन मुझे मिलना चाहिए।" यों कहकर वह उठ कर चला गया और बरगद के पेड़ के खोखले में छिपाया गया धन लाकर उनके सामने रख दिया।

बड़े चोर दोनों छोटे की अक़्लमंदी पर चकित रह गये, इस बात के लिए वे शर्मिंदा हुए कि वे बड़े होकर भी छोटे को धोखा देना चाहते थे। इस पर सारा धन छोटे को देकर बोले—"भैया, तुम आज से चोरी करना छोड़ दो। कहीं जाकर इस धन से कोई व्यापार शुरू करो। किसी योग्य लड़की के साथ शादी करके आराम से जिओ। यही हमारी इच्छा है।"

[१०]

[ युद्ध में घायल समरसेन के मर जाने की ख़बर पाकर शिवदत्त अपने अनुचरों के साथ जंगल में भाग गया। वहाँ पर भील बस्ती के एक सरदार ने उसे आतिथ्य दिया। उसी दिन रात को भील बस्तियों पर सैनिकों ने हमला किया। उन सैनिकों में एक बंदी हुआ। उसने सुबाहु का समाचार सुनाया। बाद–]

"मंदरदेव! शत्रु सैनिक की बातों ने भील बस्ती के सरदार और मुझ को भी आश्चर्य में डाल दिया। मेरे मन में यह शंका पैदा हुई कि हालत नाज़ुक होती जा रही है।" शिवदत्त ने कहा।

मंदरदेव ने सर हिला कर कहा–"तुम्हारे ये अनुभव मुझे भी आश्चर्य में डाल रहे हैं। बताओ, इसके बाद क्या हुआ ?"

"मुझे लगा कि मेरे साथ भील बस्ती के सरदार ने भी भविष्य में होने वाले खतरे को भांप लिया है। उसने मेरी तरफ़ मुड़ कर दांत पीसते हुए कहा–"हम लोग आज तक इस जंगल में किसी राजा की अधीनता को स्वीकार किये बिना स्वेच्छापूर्वक जीते आ रहे हैं, अब लगता है कि आप के राज्य की हलचल और गड़बड़ियाँ हम तक पहुँच गई हैं। यह सैनिक जिस

सुबाहू की बात करता है, उसने भले ही राजा नरवाहन की भारी मदद की हो, मगर उसे हमारी बस्तियों पर हमला करने का कोई अधिकार नहीं है।"

"आज के जमाने में जिसकी लाठी, उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ हो रही है! ऐसी हालत में भील जाति के तुम सब लोग मिलकर एक साथ उसका सामना करो तो थोड़ा-बहुत तुम लोगों का फ़ायदा हो सकता है। इस काम में मैं भी अपनी शक्ति भर तुम लोगों की मदद कर सकता हूँ।"

इसके बाद थोड़ी ही देर में भील बस्ती का प्रत्येक युवक हथियार लेकर अपने सरदार के नेतृत्व में उस दिशा में दौड़ पड़े जहाँ पर जंगल जल रहा था। मैं भी अपने अनुचरों के साथ पल भर भी देरी किये बिना उनके पीछे चल पड़ा। मेरे मन में इस बात की आशा जगी कि यदि भील जाति के लोग यह समझ ले कि नये राजा के द्वारा उनकी स्वेच्छा और स्वतंत्रता में कैसी बाधा पड़ रही है, तब इन लोगों की मदद से नरवाहन पर हमला किया जा सकता है।

ये ही सारी बातें सोचकर हम थोड़ी दूर आगे बढ़े। हमने देखा कि तलवार व भाले धारण कर नरवाहन के सैनिक एक भील बस्ती पर हमला करके उसे तहस-नहस कर रहे हैं। उनके हाथ जो भी चीज लगी, उसे तोड़-फोड़ करते, जो भी भील आया, उसे बन्दी बना कर अपने साथ लिवा ले जा रहे हैं। मुझे लगा कि शायद उन्हें शहरों में गुलामों के रूप से बेचने के लिए ले जा रहे होंगे।

इस बीच भील सरदार के नेतृत्व में आये हुए सैनिकों ने भयंकर रूप से गर्जन करते हुए नरवाहन के सैनिकों पर भीषण आक्रमण किया। उन सैनिकों का यह विचार था कि उनका सामना करने की हिम्मत कर सकने वाले यहाँ पर कोई नहीं है, ऐसी हालत में अचानक हुए इस

हमले को देख वे सारे सैनिक अपनी हिम्मत हार बैठे और तितर-बितर हो भागने लगे। भीलों ने उन सैनिकों पर तलवारों का वार करते बन्दी बने अपनी जाति के लोगों को मुक्त किया और उच्च स्वर में विजय के नारे लगाने लगे।

उस लड़ाई में मुझे अपने अनुचरों के साथ भाग लेने का मौक़ा न मिला। भीलों के साहस और पराक्रम ने मुझे चकित कर डाला। मुझे लगा कि उन लोगों को सही ढ़ंग से सैनिक शिक्षण दिया जाय तो उनकी मदद से कुंडलिनी द्वीप को नरवाहन के कबंध हाथों से मुक्त किया जा सकता है।

मैंने भील सरदार से पूछा–"क्या जलने वाले उस जंगल को यूँ ही छोड़ देना पड़ेगा? या बुझाना उचित होगा? वरना उसके शोले धीरे-धीरे यहां तक फैल सकते हैं न?"

भील सरदार ने जलने वाले जंगल की ओर एक बार नज़र दौड़ाई। तब कहा– "उस आग को बुझाना मानव मात्र केलिए संभव न होगा; केवल जलाना ही वह जानता है। सुनिये; मुझे यह बताइये कि नरवाहन नामक आप का राजा हमारे अरण्य प्रदेश को किन्हीं दूसरे लोगों के हाथों में कैसे बांट सकता है? अगर इसी तरह इस जंगल के सभी भीलों ने उनका सामना किया तो वे हमारा सर्वनाश करने की कोशिश करेंगे?"

मैं ऐसे सवाल के इंतजार में था। इस लिए मौक़ा पाकर मैंने भील सरदार को नरवाहन की कुटिल राजनीति और उस की मदद करने वाले कुछ और नमक हराम लोगों की बात विस्तारपूर्वक सुनाई। तब सुझाव दिया–"नरवाहन की मदद देने वाले कुछ ताक़तवर सरदारों के हाथ कोई न कोई प्रदेश सौंपकर संतुष्ट न किया जाय तो वे लोग उसी को खतम कर डालेंगे। इसलिए लाचार होकर उसे ये जंगली प्रदेश बांट कर उन लोगों को देना ही पड़ेगा। अगर तुम लोगों को इस खतरे से बचना

है तो सम्मिलित रूप से उसका सामना करना पड़ेगा, इसके अतिरिक्त कोई दूसरा चारा नहीं है।"

भील सरदार चार-पाँच मिनट तक मेरी बातों पर गौर से विचार करता रहा, फिर अपने अनुचरों को संबोधित कर बोला–"तुम लोग जंगल के चारों तरफ़ यह खबर पहुँचा दो। कल दुपहर को भेड़िये वाली बस्ती के पास सभी सरदारों की सभा होगी। उन्हें अपने अनुचरों के साथ हाज़िर होने की सूचना दो।"

दूसरे ही क्षण दो-चार बलवान भील युवक हथियार बंद हो चिल्लाते जंगल के चारों तरफ़ दौड़ पड़े। मैं अपने अनुचरों को लेकर भील सरदार के साथ भेड़िये वाली बस्ती की ओर चल पड़ा। हमारे पहुँचते-पहुँचते सवेरा हो गया। उस बस्ती को देखने के बाद ही मैं असली बात समझ पाया कि भील सरदार ने वहाँ पर सभी सरदारों की सभा क्यों बुलाई है?

उस बस्ती की अपनी खासियत यह थी कि उसके चारों तरफ़ मिट्टी की बनी ऊंची दीवारें खड़ी थीं। जहाँ तहाँ ऊँचे बुर्ज बने थे। बस्ती के बीच खड़े ऊँचे वृक्षों पर मचान थे और वहाँ से बाण छोड़ने केलिए अनुकूल इंतज़ाम भी था। बस्ती के बीच में खड़े विशाल साल वृक्ष पर चढ़ कर देखने से चतुर्दिक दो-तीन कोसों की दूरी तक जंगल में क्या हो रहा है, इस बात

का आसानी से पता लगाया जा सकता है। दुपहर के होते होते धीरे-धीरे सभी सरदार अपने अनुचरों के साथ बस्ती में पहुँचने लगे। उन सरदारों में युवक और बूढ़े भी थे। सब लोग हथियार बंद थे, पर उनके चेहरों पर भय के साथ जिज्ञासा भी झलक रही थी।

ठीक दुपहर के वक्त समारोह के प्रारंभ होने की सूचना के रूप में डुग्गियाँ बजाई गईं। जटाओं वाले एक विशाल बरगद के नीचे बघचर्म और हिरण के चमड़े बिछाये गये। एक एक करके सभी सरदार आकर उन पर बैठने लगे। मेरे साथ आये हुए वृद्ध को वृक्ष के तने के पास का ऊँचा आसन दिया गया। मुझे और मेरे अनुचरों को उस वृद्ध से थोड़ी दूर पर उचित आसन दिये गये।

इसके बाद सब को तरह-तरह के फल, मांस और मद्य परोसा गया। सब के संतुष्ट हो जाने पर वृद्ध ने सरदारों को सभा बुलाने का कारण समझाया—"ऐसा मालूम होता है कि हालात बदल गये हैं। इस कुंडलिनी द्वीप में आज तक कई राजा हुए, मगर जंगल में बसने वाले हम लोगों पर उन में से किसी राजा का कोई दबाव न पड़ा। इसलिए हम लोग कई पीढ़ियों से इस वन संपदा पर निर्भर हो स्वेच्छा पूर्वक अपनी जिंदगी बसर करते आ रहे हैं। आज इस द्वीप की गद्दी के बदलने से हमारी जिंदगी में खलबली मचलने की

आशंका है, पिछली रात को जो भयंकर हत्याकांड हुआ, उसका परिचय तुम लोगों को हो गया होगा।"

इसके बाद सभा में हाज़िर हुए एक-एक सरदार ने उठ कर अपने अपने अनुभव सुनाये। उनके कथनों से यह बात बिलकुल स्पष्ट हो गई कि राजा नरवाहन ने सारे जंगल को अपने प्रधान अनुचरों में बांट कर दे दिया है।

उस समस्या को हल कैसे किया जावे? यह सवाल सब के दिलों को कुरेद रहा था। सब लोग यह मानते थे कि कुछ न कुछ करना चाहिए। मगर उनके सामने कोई ठोस कार्यक्रम न था। कुछ लोगों का कहना था–"यह जंगल हमारा है। इस पर सारे अधिकार हमारे हैं।"

सब के सुझाव ध्यान से सुनने के बाद वृद्ध ने स्पष्ट शब्दों में पूछा–"ऐसी हालत में हम लोग अपने इस अधिकार को कैसे क़ायम रख सकते हैं? यही सवाल अब हमारे सामने है। तुम लोग मुझे इसका सही समाधान दे सकते हो?"

यह सवाल सुन कर सभी सरदार एक दूसरे का चेहरा ताकने लगे। थोड़ी देर तक सभा में शांति छाई रही, तब एक युवक ने उठकर सुझाव दिया–"नरवाहन के सरदार हम पर अपनी शक्ति का प्रयोग करके अपने गुलाम बनाना चाहते हैं, इसलिए हमें भी अपनी ताक़त का परिचय देकर उनको हराना होगा।"

इस सुझाव के समर्थन में सब लोगों ने तालियाँ बजाकर हर्ष ध्वनि कीं। वृद्ध नेता यही चाहता था। वह संतुष्टिपूर्वक सर हिलाते हुए बोला–"तब तो आप सब अपने अनुचरों को जल्द इकट्ठा कीजिए। दुश्मन को हमें ऐसा मौक़ा कभी नहीं देना चाहिए कि वे हमारी बस्तियों पर धावा बोल कर एक-एक पर क़ब्ज़ा करते चले जावें। हमें भी इस वक़्त अपनी सारी ताक़त लगा कर विजय या पराजय का फ़ैसला करना होगा।"

वहाँ पर हाज़िर हुए सभी सरदारों को वृद्ध नेता की सलाह पसंद आई। स्वीकृति की सूचना के रूप में सबने तालियाँ बजाईं। इस पर वृद्ध ने उठकर अपना निर्णय सुनाया– "मैं आप सब की अनुमति के साथ दुश्मन पर हमला करने के पहले एक छोटा-सा काम संपन्न करना चाहता हूँ। इस वक़्त कुंडलिनी द्वीप पर क़ब्जा किये हुए नरवाहन राजा के नाम एक चिट्ठी भेज कर सूचित करूँगा कि इस जंगली प्रदेश पर क़ब्जा करने की कोशिश करना न्याय संगत नहीं है। देखेंगे, इसका हमें क्या जवाब मिलता है? फ़िर हम लोग अपने निर्णय को अमल कर सकते हैं।"

इस सुझाव को भी संबने मान किया। इसके बाद सभा के समाप्त होने की घोषणा हुई। अंतिम निर्णय यह हुआ कि दूसरे दिन शाम तक सभी सरदार अपने अनुचरों के साथ भेड़ियोंवाली बस्ती में फिर से हाज़िर हो जावे। यह भी निर्णय लिया गया कि जंगल के मुहाने की बस्तियों को खाली करा कर औरतों और बच्चों को जंगल के भीतर की बस्तियों में सुरक्षित स्थान पर भेजा जाय।

सब के चले जाने पर वृद्ध नेता ने मुझे अपने निकट बुलाकर पूछा–"आप ने हमारे सभी सरदारों को देखा है न? आप के विचार में क्या ये लोग नरवाहन के सैनिकों के हमले का सामना कर सकने की हिम्मत कर सकते हैं?"

"मैं अभी अभी इस सवाल का कोई सही जवाब नहीं दे सकता। नरवाहन के सैनिक अच्छे ढंग से प्रशिक्षण पा चुके हैं। तिस पर उसके पास घुड़ सवारी सेना है। वे बिजली की गति के साथ हमला करके भाग सकते हैं। आप लोगों की सारी सेना सिर्फ़ पैदल सेना है। लड़ाई में जीतने के लिए सिर्फ़ हिम्मत काफ़ी नहीं होती, क्या आप भी जहाँ तक हो सके, बहुत जल्दी थोड़ी घुड़ सेना का इंतज़ाम कर सकते हैं?" मैंने पूछा।

वृद्ध ने निराशा भरे स्वर में कहा– "यह काम फिलहाल नामुमक़िन है। हमारे कुछ भील युवक इधर कुछ दिनों से जंगली घोड़ों को पालतू बनाकर बिना जीन-लगाम के सवारी करने का अभ्यास कर रहे हैं। लगाम-जीन के बगैर घोड़ों पर सवार करनेवाले कुशल योद्धा हमारे पास नहीं हैं, ज़रूरत पड़ने पर थोड़ी घुड़ सेना का भी इंतज़ाम किया जा सकता है।"

"तब तो जरूर कोशिश कीजिएगा। घुड़ सेना की नितांत जरूरत है।" मैंने सलाह दी। इसके बाद वृद्ध ने एक मृग चर्म पर तेज धारवाली छुरी से कुछ लिखा, एक युवक को बुला कर उसके हाथ वह चिट्ठी देकर यह आदेश दिया– "तुम इस पत्र को महाराजा नरवाहन के हाथ पहुँचा दो। निडर होकर तुम इस जंगल से मैदान पर जा सकते हो। तुम इसे किसी भी सैनिक को दिखाओगे तो वह तुमको राजा के पास ले जाएगा। पर तुमको बिना हथियार के राजा के पास जाना होगा।"

इस पर मेरे मन में इस बात का कौतूहल बढ़ गया कि वृद्ध के इस पत्र का क्या नतीजा निकलता है। एक बात मैंने ज़रूर भाँप ली कि वृद्ध भी इस बात का ज्यादा भरोसा नहीं रखता है कि उसके खत का भारी प्रयोजन सिद्ध होने वाला है।

उस दिन रात को हम सब भेड़ियों वाली बस्ती में ही सो गये। जंगल के जलते रहने की सूचना के रूप में रात भर शोले नज़र आ रहे थे। सूर्योदय के क़रीब हम लोग जाग उठे, तब तक वृद्ध नेता, कुछ और भील लोग बस्ती के बीच में स्थित विशाल साल वृक्ष के नीचे जमा हो गये थे। जब मैं वहाँ पहुँचा, तब मैंने देखा कि साल वृक्ष पर बैठे मैदान को परख कर देखने वाला युवक जोर-शोर से चिल्ला रहा है–"लो देखो, हमारा दूत लौट आ रहा है। लेकिन यह क्या? वह तो एक गधे पर संवार है!" (और है)

# साथी

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ पर से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा, तब शव में स्थित बेताल ने कहा–" राजन, आपकी लगन और कड़ी मेहनत को देखने पर मैं आपकी तारीफ़ किये बिना नहीं रह पा रहा हूँ। मगर अकेले ही समस्त कार्य संपन्न करने केलिए ये गुण राहायक नहीं हो सकते। कुछ ऐसे कार्य भी होते हैं जिनको पूरा करने केलिए मददगारों की भी जरूरत पड़ती है। मिसाल के तौर पर मैं आप को लवंग देश के निवासी महासार नामक एक वैद्य की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने केलिए यह कहानी सुनिये :

बेताल सुनाने लगा: लवंग देश में जड़ी बूटीवाला जंगल नामक एक बहुत बड़ा जंगल था। उसमें कई तरह की अनोखी

## बेताल कथाएं

जड़ी-बूटियां थीं। लोगों का विश्वास था कि उस जंगल की वजह से ही लवंग देश काफ़ी समृद्ध था। लेकिन एक साल उस देश में बड़ा अकाल आ पड़ा। बरसात के न होने से धीरे-धीरे जड़ी बूटी वाला जंगल उजड़ता गया। देहाती लोग जंगल के पेड़ काट कर रसोई बनाने के काम में लकड़ियाँ इस्तेमाल करने लगे थे। पेड़ों के नष्ट हो जाने से समय पर बरसात न होती थी।

यह खबर मिलते ही लवंग देश के राजा ने यह क़ानून बनाया कि राजा की अनुमति के बिना कोई भी आदमी जंगल में प्रवेश नहीं कर सकता।

राजधानी नगर में महासार नामक एक वैद्य था। वह छोटी सी उम्र में शरीर-शास्त्र और वैद्यशास्त्र का गहरा अध्ययन करके एक महान वैद्य के रूप में मशहूर हो गया था। इस कारण नगर के सभी प्रसिद्ध वैद्य उससे मन ही मन जलते थे। वे लोग यह उपाय सोच ही रहे थे कि किस तरह से उसे नीचा दिखावें। इस बीच जड़ी बटी वाले जंगल में प्रवेश करने पर राजा ने मनाही का आदेश निकाला। महासार का इलाज पूर्ण रूप से जड़ी बूटी वाले जंगल पर निर्भर था। इलाज के काम में आने वाली कई नई जड़ी बूटियों को उसने उस जंगल में खोज निकाला था।

महासार ने सभी वैद्यों से मिलकर हालत समझा दी और उन लोगों से प्रार्थना की कि राजा से मुलाक़ात करके जड़ी बूटी वाले जंगल में प्रवेश करने की अनुमति प्राप्त कर ले। लेकिन कोई भी वैद्य इस के लिए तैयार न हुआ।

आखिर महासार ने अकले ही राजा से मिलने का निर्णय किया। मगर उसके पिता ने उसे मना करते हुए समझाया— "कार्य साधक को इस तरह के मामलों में कभी अकेले जाना नहीं चाहिए, कार्य को अगर सफल बनाना है तो साथ में किसी को ले जाना होगा, पर योग्य व्यक्ति को

साथ ले जाने में ही तुम्हारी प्रतिभा निर्भर करेगी।"

"पिताजी, मैं आप की बात मानता हूँ। लेकिन अपने साथ ले जाने केलिए योग्य व्यक्ति का चुनाव करने की प्रतिभा मैं नहीं रखता। आप ही ऐसे व्यक्ति का नाम सुझाइये। मैं उसे अपने साथ ले जाकर राजा से मुलाक़ात करूँगा।" महासार ने जवाब दिया।

इस पर महासार के पिता ने कुशंक का नाम सुझाया। कुशंक लवंग देश के राजा का सौतेला भाई था। वह बड़ा ही दुष्ट स्वभाव का था। सौतेली माँ ज़िंदा थी, इसलिए राजवंश की प्रतिष्ठा को बनाये रखने के ख्याल से राजा कुशंक के दुष्ट व्यवहारों को सह लेते थे।

यह खबर किसी से छिपी न थी। फिर भी महासार के पिता ने अपने बेटे को समझाया—"एक बार तुमने कुशंक को खतरे की बीमारी से बचाया है, इसलिए राजा उसकी बात मान जायेंगे।"

महासार ने कुशंक को साथ ले जाकर राजा से मुलाक़ात की। अपने सौतेले भाई को देखते ही राजा का चेहरा विकृत हो गया। कुशंक ने राजा को महासार का परिचय करा कर निवेदन किया—"राजन, इस महान वैद्य को जड़ी बूटी वाले वन में प्रवेश करने का अनुमति-पत्र दीजिए, ताकि मुझे आप को बार-बार याद दिलाने की जरूरत न पड़े।"

राजा ने उसी वक्त महासार को अनुमति-पत्र दिलवाया। महासार ने घर लौट कर अपने पिता की सलाह की बड़ी तारीफ़ की।

यह समाचार मिलते ही राजधानी के वैद्य अचरज में आ गये। उन लोगों ने सदा केलिए महासार का पिंड छुड़ाने के लिए एक और उपाय किया। उन लोगों ने इस आशय की एक जाली चिट्ठी तैयार करके राजा के पास भिजवाया कि राज्य की सीमा पर एक गाँव में एक जानलेवा छुतहरी बीमारी फैली हुई है। उसे सिर्फ़ महासार

अकेले ही दूर कर सकता है। इसलिए उसको तत्काल वहाँ पर भेजा जाय। राजा ने उसी वक़्त महासार को उस गाँव में जाने का आदेश पत्र भेजा।

उस समय नगर के कई प्रमुख व्यक्ति महासार के यहाँ इलाज पा रहे थे। उन का इलाज पूरा किये बिना उस गाँव में जाने की इच्छा महासार के मन में न थी। साथ ही वह जानता था कि यह सब वैद्यों का षड़यंत्र है। इस कारण महासार ने राजा से मुलाक़ात करने की सोची।

इस पर महासार के पिता ने उसे समझाया– "इस बार तुम कुशंक को साथ लेकर मत जाओ। कुशंक से राजा संतुष्ट नहीं हैं; इसलिए इस बार तुम राजा के प्रिय पात्र विदूषक को अपने साथ ले जाओ।"

महासार ने अपने पिता के सुझाव का पालन किया। विदूषक ने राजा से निवेदन किया–"महाराज, आप के आदेशानुसार महासार राजधानी को छोड़ सीमाप्रांत के गाँव को जा रहे हैं। उनके साथ में तथा नगर के कुछ और प्रमुख व्यक्ति भी जा रहे हैं। इस वास्ते हमें भी उस गाँव में जाने की अनुमति दीजिए।"

महासार के साथ सीमा प्रांत के गाँव में जाने वाले व्यकितयों के नाम सुनते ही राजा चौंक उठे और विदूषक से इसका कारण पूछा। विदूषक ने बताया कि वे सब लोग बीमार हैं और महासार के यहाँ इलाज करवा रहे हैं। इस पर राजा ने उसी समय अपने आदेश को रद्द किया और एक कुशल वैद्य को उस गाँव में भेजने की जिम्मेदारी राजा ने राजवैद्य को सौंप दिया।

एक बार राजधानी नगर में सत्वसार नामक एक महान वैद्य आ पहुँचे। लोगों का यह विश्वास था कि सत्वसार इलाज संबंधी सारे रहस्य जानते हैं और वे अपने कुछ प्रिय व्यक्तियों को चिकित्सा शास्त्र के रहस्य बताते हैं। लेकिन उन के साथ एक कठिनाई यह थी कि वे अगर एक बार किसी पर नाराज़ हो जाते हैं तो

फिर उसे अपने शिष्य के रूप में स्वीकार नहीं करते ।

नगर के कई वैद्य उन से मिलने गये और उनसे गालियाँ खाकर लौट आये । इस बार महासार के पिता ने राजनर्तकी चित्रलेखा को साथ ले जाने की सलाह दी । एक बार राजनर्तकी के पैर पर फोड़ा निकल आया, इस पर राज वैद्य ने शस्त्र-चिकित्सा करके पैर काटने की ज़रूरत बताई । इस पर यह सोच कर राजनर्तकी डर गई कि पैर काटने पर उसके नृत्य और राजनर्तकी के पद में बाधा पड़ेगी । ऐसी हालत में वह महासार के पास इलाज कराने आई । महासार ने शास्त्र-चिकित्सा के बिना ही दवाइयाँ दे कर राजनर्तकी के फोड़े को चंगा किया ।

महासार के मुंह से सारा समाचार जान कर राजनर्तकी उस के साथ सत्वसार के यहाँ जाने को तैयार हो गई । चित्रलेखा के सौंदर्य को देख सत्वसार आश्चर्य में आ गये ।

नर्तकी ने सत्वसार को प्रणाम करके कहा—" महानुभाव, में ने सुना था कि आप वैद्य शास्त्र में अत्यंत प्रवीण और दक्ष हैं, मगर में ने कभी न सोचा था कि आप का सौंदर्य देवताओं को भी मात करनेवाला है । में आपके सामने नाचने के ख्याल से आई हूँ ।"

इसके बाद उसने महासार का परिचय कराकर सत्वसार से कहा—" मैंने सुना है कि आप अपनी विद्या के साथ शांत गुण भी रखते हैं । मैं आशा करती हूँ कि आप मेरे इस मित्र को अपने शिष्य के रूप में स्वीकार करेंगे ।" इस पर सत्वसार ने प्यार के साथ महासार का परामर्श किया और चार दिनों में उन्हों ने चिकित्सा शास्त्र के सारे रहस्य उसे बताये, तब वहाँ से चले गये ।

इसके बाद महासार ने अपने पिता से कहा—" पिताजी, आपने कई बार विवाह करने की सलाह दी । पर मैंने उसे इलाज के पेशे में बाधक समझ कर डर के मारे ब्रह्मचारी बने रहने का निश्चय बताया,

लेकिन अब मेरा मन बदल गया है, आप अपनी पसंद की लड़की का चुनाव कीजिए, मैं उसके साथ विवाह करने को तैयार हूँ।"

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन, महासार के पिता ने अपने पुत्र को जो सलाहें दीं, वे विचित्र और अदूरदर्शिता पूर्ण नहीं हैं? एक बार उन्होंने राजा के सौतेले भाई को साथ ले जाने की सलाह दी, जिसके नाम से ही राजा चिढ़ते थे। दूसरी बार विदूषक को साथ ले जाने को कहा। तीसरी बार सत्वसार जैसे महा व्यक्ति के साथ कार्य साधने के लिए एक नर्तकी की मदद लेने की सलाह दी। ये तीनों सलाहें उल्टे परिणाम का कारणभूत बन जानेवाली थीं, पर ऐसा न हुआ। इसके पीछे उनकी क़िस्मत की ताक़त है या अन्य कोई कारण हैं? इन संदेहों का समाधान जानकर भी न देंगे तो आप का सर फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों जवाब दिया– "महासार का पिता दुनियादारी ज्ञान के साथ समाज में रहने वाले विविध स्तरों के लोगों की मानसिक दशाओं से परिचित हैं। राजा फिर से एक बार जिस सौतेले भाई का चेहरा देखने से इनकार करते थे, उसे साथ ले जाने की सलाह देकर, महासार की इच्छा को राजा के द्वारा स्वीकृत कराने लायक़ बनाया, विदूषक की बाबत भी यही बात हुई। शासन के कार्यों में हमेशा डूबे रहने वाले राजा केलिए विदूषक से बढ़ कर कोई अंतरंग मित्र नहीं हो सकता। अब सत्वसार की बात लीजिए, वे स्वभाव से क्रोधी हैं, मगर वे ललित कलाओं तथा अपूर्व सौंदर्य के सामने सर झुकने वाले हैं। इन सारे अनुभवों के आधार पर महासार ने यह समझ लिया कि मानव जीवन में साथ देने वाले एक व्यक्ति की जरूरत है। इसलिए विवाह करके गृहस्थ बनने को भी उसने मान लिया।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

# पागलपन की सजा

एक मुसाफ़िर जंगल के रास्ते से जा रहा था, इतने में अंधेरा हो गया। वह सोच ही रहा था कि अब क्या किया जाय, उसी वक़्त उसके सामने थोड़ी दूर पर एक झोंपड़ी दिखाई दी। मुसाफ़िर ने उस झोंपड़ी में प्रवेश किया। झोंपड़ी के भीतर एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति रसोई बना रहा था। एक कोने में एक बिल्ली दुबक कर लेटी हुई थी।

मुसाफ़िर ने पूछा–"महाशय, मैं एक मुसाफ़िर हूँ। आज रात का खाना खिला कर मुझे लेटने केलिए थोड़ी जगह दे तो मैं आपकी इस भलाई को कभी भूल नहीं सकता।"

"तुमको खाना खिलाने में, एक रात बिताने के लिए जगह देने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। पर मेरा एक रिवाज है। मेरे घर जो आदमी मेहमान बनकर आता है, उसे मेरे सवालों का सही समाधान देना होगा। वरना मैं उसके गाल पर थप्पड़ लगाऊँगा।" गृहस्थ ने कहा।

उसकी शर्त को मुसाफ़िर ने मान लिया। "तब तो दर्वाजा बंद कर भीतर आ जाओ। थोड़ी देर हाथ सेंक लो। इतने में रसोई बन जाएगी।" गृहस्थ ने बताया।

थोड़ी ही देर में गृहस्थ ने रसोई बना कर दोनों को परोसा। दोनों ने भर पेट खाना खाया। बातचीत के सिलसिले में गृहस्थ ने अपने मेहमान को कोने में लेटी बिल्ली को दिखा कर पूछा–"वह क्या है ?"

यह आदमी बच्चे की तरह कैसा साधरण सवाल पूछ रहा है, यों सोचते अचरज में आकर मुसाफ़िर ने जवाब दिया–"यह तो बिल्ली है।"

"नहीं, वह तो शुचि है। समझें! इन शब्दों के साथ गृहस्थ ने मेहमान के गाल पर

थप्पड़ लगाया। गृहस्थ के इस विचित्र व्यवहार पर अतिथि आश्चर्य में आ गया। इस बार गृहस्थ ने पानी से भरा घड़ा दिखाकर यात्री से पूछा–"इसके अंदर क्या है?"

"पानी है।" यात्री ने झट जवाब दिया।

"नहीं, इसके अंदर अच्छाई है।" यों कहते गृहस्थ ने यात्री के गाल पर थप्पड़ मारा।

थोड़ी देर बाद गृहस्थ ने फिर पूछा–"उस चूल्हे के अन्दर क्या है?"

"आग।" मुसाफ़िर ने कहा।

"नहीं, सुख है।" गृहस्थ ने यह जवाब देकर यात्री के गाल पर थप्पड़ मारा।

आखिर गृहस्थ ने छत की ओर उँगली दिखाकर पूछा–"वह क्या है।"

"छत है।" यात्री ने जवाब दिया।

"नहीं, ऊँचाई है।" यों उत्तर देकर गृहस्थ ने यात्री के गाल पर थप्पड़ मारा।

थोड़ी देर बाद यात्री उठ खड़ा हुआ और बोला–"मेरा दिमाग गरम हो गया है। बाहर जाकर मैं थोड़ा वायु का सेवन कर लौटता हूँ।" फिर वह किवाड़ खोल कर बाहर चला गया।

उसी समय बिल्ली भी उठकर बाहर चली गई। यात्री ने बिल्ली को पकड़ कर उसकी पूंछ में कपड़े बांध दिये और उस में आग लगा कर छत के ऊपर चढ़ा दिया। इसके बाद अंदर आकर गृहस्थ से बोला–"महाशय, आपकी शुचि सुख को साथ लेकर ऊँचाई में गई है। अच्छाई से सुख को रोकिये।"

ये बातें गृहस्थ की समझ में न आईं। वह खीझ कर बोला–"ये बेमतलब की बातें कैसी? साफ़-साफ़ क्यों नहीं बोलते?"

"अरे मूर्ख, तुम्हारे घर की छत में आग लग गई है। जल्दी उसे बुझा दो। तुम्हारी मेहमानदारी से तंग आ गया हूँ। बस, अब मैं चलता हूँ।" इन शब्दों के साथ यात्री ने गृहस्थ के गाल पर धड़ाधड़ थप्पड़ जमा दिये और उस अंधेरे में ही अपने रास्ते चल पड़ा।

# सच्ची लोकप्रियता

उत्कल का व्यापारी उमाकांत अपने राज्य से निकल कर विजयपुरी राज्य में जा पहुँचा, सीतापुर नामक बस्ती में रेशमी कपड़ों का व्यापार करने लगा।

सीतापुर में राजनाथ और रंगनाथ नामक दो बड़े संपन्न परिवार के लोग निवास करते थे। वे दोनों गाँव पर अपना अधिकार जमाना चाहते थे। इस वास्ते अकसर उनके बीच झगड़ा हुआ करता था। इसका नतीजा यह हुआ कि उनका समर्थन करनेवाले लोग भी दो दलों में बंट गये। उमाकांत उस गाँव में व्यापार करने आया था, इसलिए वह गाँव के झगड़ों में पड़ता न था, इस कारण गाँव के दोनों दलों के लोग अपनी समस्याओं के बारे में उमाकांत की सलाह लिया करते थे।

सीतापुर का शिवाला इधर कई दिनों से उजड़ी हालत में था। बूढ़े जमीन्दार के मरने के बाद उनके लड़के ने जब जमीन्दारी अपने हाथ में ली, तब उसने यह निश्चय कर लिया कि मंदिर की मरम्मत कराकर उसकी देखभाल के लिए मंदिर के नाम थोड़ी सी जमीन लिख दे।

इस निर्णय के बाद नये जमींदार ने सीतापुर के गाँववालों को यह समाचार भेजते हुए पूछा कि शिवाले के न्यासी के रूप में किसी अच्छे सज्जन का नाम सुझावें। लेकिन राजनाथ और रंगनाथ के दल के लोग आपस में सलाह-मशविरा करके न्यासी का निर्णय नहीं कर पाये।

एक महीना बीत गया, मगर सीतापुर से जमीन्दार साहब को कोई जवाब नहीं मिला। इस पर उन्होंने अपने नौकर भेजकर उस गाँव की हालत जान ली। आखिर उन्होंने अपनी कचहरी के एक अधिकारी को सीतापुर में भेजा। उस

रवीन्द्र मोरिया

अधिकारी ने जमीन्दार की ओर से गाँववालों को उनका संदेशा यों सुनाया—"हमें मालूम हुआ है कि आपके गाँव में बसे विदेशी व्यापारी उमाकांत गाँव की सारी जनता में ज्यादा लोकप्रिय है। हम इस ख़्याल से उनको मंदिर का न्यासी नियुक्त कर रहे हैं कि उनको यह पद देने पर किसी को कोई आपत्ति न होगी!"

इस निर्णय के विरुद्ध या समर्थन में भी किसी ने अपने विचार नहीं बताये, बल्कि सब लोग चुप रह गये। इस पर उमाकांत ने खुद दखल देते हुए अधिकारी से निवेदन किया—"महाशय, आप कृपया जमीन्दार साहब तक मेरा यह निवेदन पहुँचा दीजिए, वह यह है कि मंदिर के न्यासी जैसे ऊँचे पद के लिए में क़ाबिल नहीं हूँ!"

इसके बाद अधिकारी सीतापुर से लौट गया। उमाकांत के घर पहुँचने के पहले ही उसकी पत्नी ने दूसरों के मुंह से यह खबर जान ली, उसने उमाकांत के घर लौटते ही पूछा—"तुमने जो जवाब दिया है, वह क्या विवेकपूर्ण है? जमीन्दार साहब ने गाँव में तुम्हारी लोकप्रियता का समाचार जानने के बाद ही तो तुमको मंदिर का न्यासी नियुक्त करने का निर्णय लिया है। पराये देश में अगर इस प्रकार का आदर मिलता है तो कोई उसे ठुकरा देता है?"

उमाकांत ने शांतिपूर्वक अपनी पत्नी को समझाया—"पगली, जिस गाँव के लोग झगड़े व फ़सादों में डूबे रहते हैं, उनके बीच मुझ जैसे तटस्थ रहनेवालों के लिए हमेशा एक विशिष्ट स्थान मिलता ही रहता है! लेकिन उसे हमारी लोकप्रियता समझ बैठना भारी भूल है। अगर सचमुच मुझे इस गाँव में लोकप्रियता होती तो जमीन्दार साहब पहले यह कहला न भेजते कि न्यासी के पद को संभालने के लिए क़ाबिल आदमी कौन हैं? तभी गाँववाले एकमत से मेरा नाम सुझाते! राजनाथ और रंगनाथ दोनों उस पद को

चाहते थे, इसलिए उन लोगों ने कोई जवाब न दिया, बल्कि मौन रह गये थे।"

इसके बाद दो महीने के अन्दर मंदिर की मरम्मत का काम पूरा हुआ। मंदिर का उद्घाटन करने के लिए खुद जमीन्दार साहब आ पहुँचे। उन्होंने सारे गाँववालों को मंदिर के पास बुलवा भेजा और कहा– "हमें हाल ही में मालूम हो गया कि गाँव पर अधिकार चलाने के संबंध में आप लोग आपस में झगड़ा कर रहे हैं! मंदिर के न्यासी का मतलब गाँव का अधिकारी नहीं होता, बल्कि भगवान का प्रधान सेवक होता है! इस पद के वास्ते आप सब लोगों में कोई ऐसा आदमी नहीं है, जिस पर आप सब का विश्वास हो?"

ये बातें सुनने के बाद राजनाथ और रंगनाथ के मन में इस बात का विश्वास जम गया कि न्यासी के पद को लेकर गाँव पर अधिकार चलाने के उनके उद्देश्य में कोई बाधा न पड़ेगी। फिर क्या था, उसी क्षण दोनों अपने आपसी वैर को भूल गये। परस्पर सलाह-मशविरा करके जमीन्दार साहब से बोले–"जनाब, हम दोनों का प्रभाव गाँव की आधी-आधी जनता तक ही सीमित है; लेकिन उमाकांत का प्रभाव गाँव की सारी जनता पर है। उनको मंदिर का न्यासी बनाने के लिए हम लोग एक मत से अपनी सम्मति देते हैं।"

इस पर जमीन्दार साहब ने उसी वक़्त उमाकांत को शिवमंदिर के न्यासी के पद पर नियुक्त किया। यह खबर मिलने पर उमाकांत की पत्नी ने अपने पति के घर लौटते ही पूछा–"पहले आपने जमीन्दार के सुझाव का तिरस्कार किया था, मगर आज आपने कैसे उनकी बात मान ली?"

उमाकांत ने इतमीनान से जवाब दिया– "उस दिन जमीन्दार साहब अकेले ने ही मुझे न्यासी का पद संभालने को कहा था, लेकिन आज दो परस्पर विरोधी राजनाथ और रंगनाथ ने मेरा समर्थन किया! सच्ची लोकप्रियता के माने यही होता है!"

# बातूनी

तीर्थाटन करते कुछ लोग किसी गाँव की सराय में रुके। बातूनी के रूप में मशहूर जंबुनाथ सराय में दीखनेवाले हर किसी से अंट-संट सवाल पूछकर तंग करता था।

थोड़ी दूर पर एक चबूतरे पर बैठे शंभुनाथ यह सब तमाशा देखता रहा, वह सोच ही रहा था कि जंबुनाथ की बकवास कैसे बंद करें? इतने में जंबुनाथ उसके समीप आ पहुँचा, और उसने पूछा—"अजी, आप किस गाँव के रहनेवाले हैं? लगता है कि आपको मैंने कहीं देखा है!"

फिर क्या था, शंभुनाथ को मौक़ा मिल गया। उसने कहना शुरू किया—"वैसे मैं गया का निवासी हूँ। मेरे पिता दरभंगा के हैं, मेरे दादा मुजफ्फरपुर के थे। मेरे पुरखे तो उत्तर प्रदेश के निवासी थे। कहा जाता है कि आठवीं शती में आर्यावर्त पर शासन करनेवाले हर्षवर्द्धन के यहाँ महामंत्री का पद संभालने वाले हमारे ही वंश के थे। यह भी कहा जाता है कि उस वंश के लोगों ने चारों तरफ़ फैलकर भारत के हर कोने में शासन किया था। श्रीरामचन्द्रजी जब बनवास में जाने लगे..." आगे कुछ और कह ही रहे थे, इस बीच बातूनी जंबुनाथ घबड़ा गया, खीझकर बोला—"बस, बस! अब बंद कीजिएगा। मुझे किसी जरूरी काम पर जाना है!" ये शब्द कहते उसने अपनी शाल झाड़ दी, कंधे पर डाल सराय के चबूतरे पर से उतर पड़ा, शिवाले की ओर चल पड़ा।

सराय में बैठे यात्रियों ने शंभुनाथ की ओर ख़ुशी से इस तरह देखा, मानो उसका पिंड छूट गया हो!"

# धोखे की सजा

प्राचीनकाल में काशी राज्य पर राजा ब्रह्मदत्त राज्य करते थे। उनके यहाँ पिंगल नामक एक पुरोहित था। उसकी देह की छाया पिंगल वर्ण की थी, उसका सिर गांजा था, उसका मुंह पोपला था। उस समय बोधिसत्व नक्कारिय नाम से पिंगल के यहाँ विद्याभ्यास किया करता था।

राज पुरोहित पिंगल के एक साला था। उसका भी वर्ण पिंगल था, सिर गांजा था और मुंह पोपला। वह भी पिंगल के समान प्रतिभा रखता था। बहनोई और साला अपने को एक दूसरे से बड़ा मानते थे, इस कारण दोनों के बीच गहरी दुश्मनी रहती आई। पिंगल ने अपने साले को नीचा दिखाने की कुबुद्धि से कई बार कोशिश की, लेकिन उसे सफलता न मिली।

आखिर पिंगल ने अपने साले को मार डालने की योजना बनाई। उसने राजा के यहाँ जाकर निवेदन किया—"महाराज, हमारा काशी नगर सरे भारत में श्रेष्ठ है। आप देश के समस्त राजाओं में महान हैं। ऐसी हालत में हमारे दुर्ग के निर्माण में दोष का होना चिंता जनक है। हमारे क़िले के दक्षिणी द्वार के निर्माण में गलती रह गई है। यह हमारे लिए अमंगलकारी है। उसकी वज़ह से देश में हमारा अपयश भी हो सकता है! इसलिए उस दोष को यथा शीघ्र दूर करना चाहिए।"

"इसके वास्ते हमें क्या करना होगा?" राजा ने पिंगल से पूछा।

"उस द्वार को पहले गिराना होगा! इसके बाद शुभदायक लकड़ी लाकर एक और द्वार बनवाना पड़ेगा। फिर नगर-

देवियों को बलि चढ़ाकर एक शुभ मुहूर्त में नये द्वार को खड़ा करना होगा।" पिंगल ने सुझाया।

राजा ने पिंगल के सुझाव को मान लिया। उनकी आज्ञा लेकर पिंगल ने दक्षिणी द्वार को तुड़वा दिया। उसकी जगह बिठाने के लिए नया द्वार जल्द तैयार कराया गया।

इस पर पिंगल ने राजा के पास जाकर विनयपूर्वक कहा–"महाराज, नया द्वार तैयार हो गया है! उसे स्थापित करने के लिए कल एक बढ़िया मुहूर्त है। उसके लिए आवश्यक बलि देकर द्वार को स्थापित करने की अनुमति दीजिए!"

"बलि चढ़ाने के लिए क्या-क्या इंतजाम करना होगा?" राजा ने पूछा।

"महाराज, पिंगल वर्ण, गंजा सिर और पोपले मुँहवाले एक ब्रह्मण की बलि चढ़ानी होगी। इस द्वार की रक्षा करनेवाली महती शक्तियों को ऐसे ब्राह्मण के रक्त और मांस के द्वारा संतुष्ट करना होगा। इसके बाद उस ब्राह्मण को वहीं पर गाड़कर उसी जगह नये द्वार को खड़ा करना होगा।" पिंगल ने समझाया।

"अच्छी बात है! ऐसे ब्राह्मण की खोज करके मंगवा लो और द्वार खड़ा करवा दो।" राजा ने अनुमति दी।

पिंगल यह सोचकर फूला न समाया कि उसके प्रबल शत्रु साले को खतम करने के लिए राजा की अनुमति मिल गई है। फिर वह घर पहुँचकर अपनी पत्नी से बोला–"सुनो, कल तक तुम्हारे भाई की आयु समाप्त होने वाली है। देखती रहो, कल मैं उसे नये द्वार की बलि चढ़ाने जा रहा हूँ।" यों उसने निडरता के साथ डींग मारी।

"मेरे भाई की ही बलि क्यों चढ़ानी है? इसे राजा ने कैसे मान लिया है?" पिंगल की पत्नी ने पूछा।

"मैंने राजा से यह थोड़े ही बंताया है कि अमुक आदमी की बलि दूंगा? मैंने सिर्फ़ यही बताया कि पिंगल वर्ण और पोपले मुंह वाला ब्राह्मण चाहिए। राजा ने मान लिया। कल में राजा को तुम्हारे भाई को दिखाकर सलाह दूंगा कि यह आदमी बलि चढ़ाने के लिए उपयुक्त होगा। मेरी बात को कौन इनकार करेगा?" पिंगल ने कहा।

इसके बाद पिंगल की पत्नी ने अपने पति के साथ कोई-वाद-विवाद नहीं किया। गुप्त रूप से अपने भाई के पास सारा समाचार पहुँचा कर उसे आगाह कर दिया कि वह प्राणों के साथ बचना चाहता है तो सवेरे के अन्दर उस नगर को छोड़कर कहीं चले जावे।

जब पिंगल के साले को उसे मार डालने के षड़यंत्र का पता चला, तब उसने अपने ही जैसे वर्ण, पोपले मुंह व गांजा सिरवाले दो और आदमियों को मिलाकर उसी रात को नगर छोड़ चला गया।

दूसरे दिन सवेरे पिंगल ने राजा के पास जाकर कहा-"महाराज, बलि के लिए आवश्यक आदमी अमुक जगह होगा। आप कृपया उसको यहाँ पर बुलावा दीजिए।"

राजा ने पिंगल के द्वारा सुझाये गये उस आदमी को लिवा लाने के लिए अपने नौकरों को भेजा। नौकरों ने लौटकर बताया कि उस जगह रहने वाला आदमी कल रात को ही इस देश को छोड़ कहीं चला गया है।

नौकरों से यह समाचार पाकर राजा ने कहा-"अब क्या किया जाय? ऐसे लक्षण वाले ब्राह्मण को किसी तरह से ढूंढ लाना पड़ेगा!"

इस पर मंत्रियों ने सालाह दी-"महाराज, यह कौन बड़ी भारी समस्या है? हमारे पुरोहित के अंदर ये सारे लक्षण हैं। उन्हीं की बलि चढ़वा दीजिए।"

"ऐसा ही किया जा सकता है। लेकिन इसके बाद मुझे पुरोहित चाहिए न? क्या

इसके योग्य कोई आदमी है? यह बात भी पुरोहित की बलि चढ़ाने के पहले सोच लीजिए!" राजा ने सुझाया।

"हमारे पुरोहित के पास तक्कारिय नामक एक शिष्य है। वह अपने गुरु से भी कहीं ज्यादा अक़्लमंद और बुद्धिमान है। उसको आप अपने पुरोहित नियुक्त कर सकते हैं।" मंत्रियों ने सलाह दी।

दूसरे ही क्षण राजा ने तक्कारिय को बुलवा भेजा और कहा-"तुमको आज से मेरा पुरोहित नियुक्त करता हूँ। तुम इस पिंगल की शास्त्र-विधि से बलि चढ़ाकर गढ़वा दो और उसकी क़ब्र पर ही द्वार रखवा दो।"

इस पर तक्कारिय दक्षिणी द्वार के पास पहुँचा; पिंगल को यज्ञ पशु के रूप में अलंकृत करके उसके हाथ-पैर बंधवा दिये और नये द्वार के पास पहुँचवा दिया। जहाँ पर बलि चढ़ाने के लिए द्वार स्थापित होना था, वहाँ पर एक गहरा गड्ढा खोदा गया था। उस गड्ढे में गुरु और शिष्य दोनों पहुँचे। उस वक़्त पिंगल दहाड़े मारकर रोते हुए बोला-"अरे शिष्य! किसी दूसरे के लिए खोदे गये गड्ढे में मैं ही पहुँच गया हूँ।"

"गुरुदेव! जो आदमी जान-बूझकर दूसरों की हानि करने की सोचता है, उसे कभी न कभी अपने हाथों खोदे गये गड्ढे में गिरना ही पड़ेगा। आप चिंता न कीजिए। मैं राजा के पास पहुँच कर बता दूँगा कि आधी रात तक कोई बढ़िया मुहूर्त नहीं है। इसके बाद फिर कोई न कोई उपाय करके आपके प्राण बचाऊँगा!" तक्कारिय ने समझाया।

उसने अपने कहे अनुसार बलि का मुहूर्त आधी रात के लिए बदलवा दिया। उस दिन रात को अंधेरे में पिंगल को उस देश को छोड़ भाग जाने की सलाह दी और उसकी जगह एक मृत बकरी को लाकर गड्ढे में गड़वा दिया और सवेरा होने के पहले ही वहाँ पर नये द्वार को प्रतिष्ठित कराया।

# राज्य की प्यास

जलालुद्दीन खिल्जी नामक सेनापति ने दिल्ली की गद्दी पर क़ब्ज़ा कर लिया। इसके साथ गुलाम वंश के सुलतानों का राज्य ख़तम हो गया। जलालुद्दीन सत्तर साल का था। यह अफ़वाह है कि बाल्बन के पोते कैकौबाद की इसीने हत्या कराई है। जलालुद्दीन १२९० में गद्दी पर बैठा था।

उसके दो बेटे थे। फिर भी वह अपने भानजे अल्लाउद्दीन के प्रति बड़ा प्यार रखता था जो बाद को उसकी पुत्री के साथ शादी करके उसका दामाद भी बना था। उसको सुलतान नें सूबा कारा के शासक के रूप में नियुक्त किया। अल्लाउद्दीन सुलतान के प्रति बड़ी श्रद्धा व भक्ति का अभिनय किया करता था।

अल्लाउद्दीन के मन में बड़ी राज्य कांक्षा थी। उसने सुलतान की अनुमति तक लिये बिना संपन्न राज्य देवगिरि पर हमला किया। (इसके बाद वह नगर दौलताबाद कहलाया)। देवगिरि का राजा रामदेव ने अपनी हार की शंका करके अल्लाउद्दीन को बहुत सारा सोना, क़ीमती मोती व रत्नों के साथ घोड़े और हाथियों को भी समर्पित किया।

अपनी अनुमति लिये बिना अल्लाउद्दीन का पराये देशों पर हमला करना सुलतान को बड़ा बुरा लगा और उसे क्रोध भी आ गया। लेकिन चालाक अल्लाउद्दीन ने जो कुछ धन-संपत्ति पाई, उसकी सूची सुलतान के हाथ सौंप दी। इस पर बूढ़ा सुलतान शांत हो गया और उस संपत्ति को अपने क़ब्जे में करने को व्यग्र रहने लगा।

अल्लाउद्दीन जो संपत्ति लाया था, उसे लेने के लिए सुलतान जलालुद्दीन कारा के लिए चल पड़ा। वह नदी में जब नौका पर जाने लगा, तब नदी के दोनों किनारों पर उसके साथ भारी फ़ौज चली। मंत्रियों ने सुलतान को समझाया कि कहीं अल्लाउद्दीन कोई षड़यंत्र कर बैठे; मगर उनकी बातें जलालुद्दीन के कानों में न घुसीं।
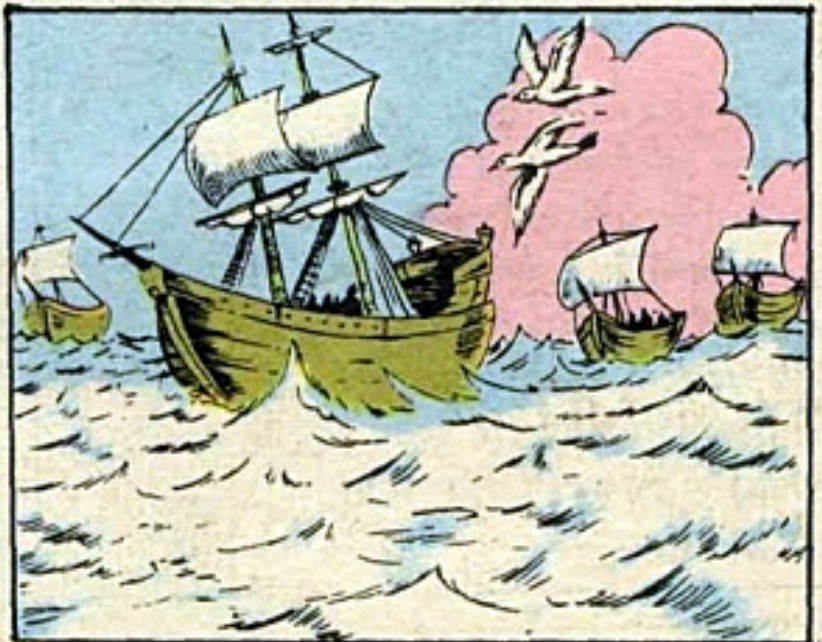
जलालुद्दीन जब कारा पहुंचा, तब अल्लाउद्दीन द्वारा भेजा गया एक षड़यंत्रकारी सुलतान से मिलकर बोला–"जहांपनाह, अल्लाउद्दीन यह सोचकर भयकंपित हैं कि आप उनपर नाराज हैं और फौज लेकर आ रहे हैं, वे सोचते हैं कि खुदखुशी के अलावा कोई दूसरा चारा नहीं है। अगर आप अकेले ही आयेंगे तो वे सोचेंगे कि उनकी जान बच गई है।"

इस पर फौज को नदी के पास रुक जाने की आज्ञा देकर मुट्ठी भर अंग रक्षकों के साथ सुलतान चल पड़ा। तब अल्लाउद्दीन के एक भाई ने कहा– "जहाँपनाह, आप को इतने सारे अंगरक्षकों के साथ आते देख अल्लाउद्दीन जान के डर से थर-थर कांप रहे हैं।" इस पर सुलतान ने अपने अंग रक्षकों को भी लौट जाने का आदेश दिया।

इसके बाद बूढ़ा सुलतान अल्लाउद्दीन के भाई के साथ नदी पार कर उस किनारे पहुँचा। वहाँ पर अल्लाउद्दीन के सिपाहियों को क़तार बाँधे खड़े देख वह अचरज में आ गया। अल्लाउद्दीन के भाई ने सुलतान से कहा–"ये सिपाही सब आप को सलाम देने के लिए खड़े हैं।" अल्लाउद्दीन के भाई ने सुलतान के बैठने के लिए एक ऊँचा आसन दिखाया।

थोड़ी देर में अल्लाउद्दीन ने आकर सुलतान के पाँवों पर गिर कर प्रणाम किया। सुलतान ने बड़े प्यार से उसके सिर पर अपना हाथ फेरा। दूसरे ही क्षण अल्लाउद्दीन ने अपने दोनों बलिष्ट हाथों से सुलतान को कस लिया। तुरंत अल्लाउद्दीन के अनुचरों ने सुलतान को छुरियों से भोंक दिया। सुलतान वहीं पर ढेर हो गया।

इसके बाद अल्लाउद्दीन ने सुलतान जलालुद्दीन के बेटों और अंतरंग मित्रों को मरवा डाला और १२९६ में दिल्ली की गद्दी पर क़ब्जा कर लिया। फिर हमारे देश पर आक्रमण करने जो मंगोल आये, उनको मार भगाया और कई रज्यों को हराकर अपने राज्य का विस्तार किया। इसके पूर्व दिल्ली पर जितने सुलतानों ने राज्य किया, उन सब से वह ज्यादा ताक़तवर कहलाया।

अल्लाउद्दीन अपने सारे दरबारियों पर शंका करता था। एक बार वह अपने सलाहकारों के साथ बैठकर शराब पी रहा था। बड़ी रात बीत गई थी। एक प्रमुख अधिकारी ने बाकी लोगों को इस विचार से इशारा किया कि अब उन्हें वहाँ से चले जाना अच्छा होगा। अल्लाउद्दीन ने सोचा कि इसके पीछे कोई षड्यंत्र है, उसने अधिकारी के साथ सबको मरवा डाला।

दूसरे दिन सवेरे तक अल्लाउद्दीन का नशा उतर गया, तब उसे अपनी भूल मालूम हो गई। इस पर वह बड़ा पछताया। इस हत्याकांड का कारण शराब पीना माना। उसने उसी क्षण राज्य भर में शराब बंदी का आदेश जारी किया। सिपाहियों ने दल बांधकर शराबखानों पर हमला करके उन सब में आग लगा कर भस्म कर डाला।

# पेटू

एक जमीन्दार ने अपनी माँ के श्राद्ध के दिन एक दावत का इंतजाम किया। अड़ोस-पड़ोस गाँव के लोगों को निमंत्रण देने ढिंढोरा पिटवा दिया। बहुत-से लोग उस दावत में आये।

रसोई परोसी जा रही थी। उस वक्त जमींदार के नौकर लाठी लेकर आ पहुँचे और धमकी देते हुए बोले—"तुम लोगों में किसी को भी दुबारा कोई चीज़ परोसने के लिए माँगना नहीं चाहिए। जो लोग इस शर्त को तोड़ते हैं, उन्हें बीस बार लाठी से मारने का जमीन्दार ने निर्णय किया है।"

दाल, सब्जी, खीर, पापड़ सब चीजें बड़ी स्वादिष्ट थीं, फिर भी लाठियों की मार के डर से किसी ने दुबारा कोई चीज़ न माँगी। लेकिन उनके बीच जमुना प्रसाद नामक एक पेटू था। उसने हिम्मत करके रसोइयों से पूछा कि उसे एक बार और खीर परोसे?

जमुना प्रसाद की माँग देख सब लोग घबरा गये। रसोइयों ने चुपचाप उसे खीर परोस दी। भोजन के समाप्त होने के बाद नौकरों ने जमुना प्रसाद को ले जाकर जमीन्दार के सामने खड़ा किया और असली बात बता दी।

जमीन्दार खुशी से फूले न समाये, बोले—"जमुना प्रसाद, मैं तुम जैसे एक पेटू आदमी के इंतजार में था। साल भर पहले मेरी माँ तीर्थाटन पर गयीं। काशी के पास गंगाजी में नहाते बह गईं, जब वह किनारे लगीं, तब भूख की पीड़ा से मर गईं। पुरोहितों ने बताया है कि उनकी आत्मा की शांति के लिए साल भर एक पेटू आदमी को आतिथ्य देना होगा। तुम क़िस्मत से हमें मिल गये हो!"
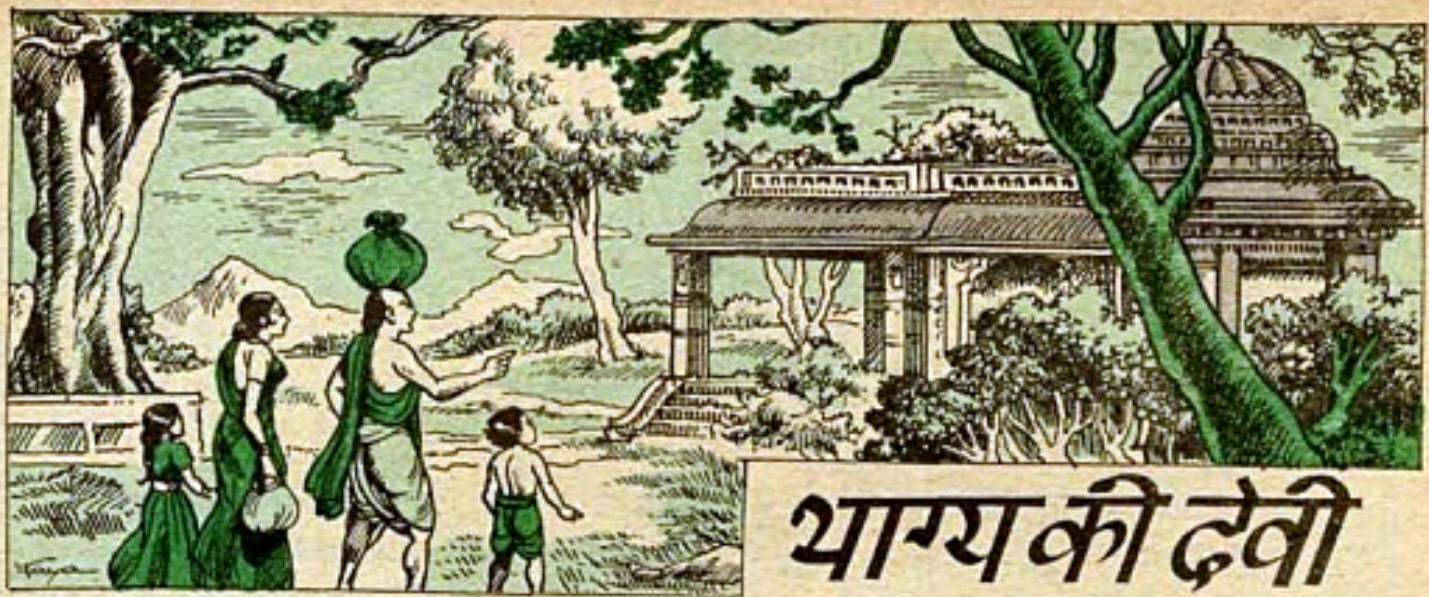
# भाग्य की देवी

गंगावती नामक गाँव की सीमा पर एक देवी का उजड़ा हुआ मंदिर था। कई दिनों से देवी की पूजा-अर्चना का प्रबंध न था। इसलिए उस मंदिर में कोई आता-जाता न था। इसका नतीजा यह हुआ कि मंदिर का भीतरी हिस्सा मकड़ी के जालों और धूल से भर गया। छत पर तरह-तरह के पौधे उग आये।

किसी दूसरे गाँव का पुजारी रामप्रसाद शास्त्री अपने गाँव के लोगों से तंग आकर अपने बीबी-बच्चों को साथ ले जीविका की खोज में चल पड़ा। गंगावती के समीप पहुँचने पर उसने देवी का उजड़ा हुआ मंदिर देखा।

उस मंदिर को देखते ही रामप्रसाद के मन में एक उपाय सूझा। उसने अपनी पत्नी से कहा—"देखती हो न, इस गाँव के लोग देवी के मंदिर को कैसे उजड़ने दे रहे हैं? हम मंदिर को साफ़ करके यहीं पर अपना स्थिर निवास बनायेंगे। कभी न कभी हम पर देवी की कृपा जरूर होगी।"

पुजारी की पत्नी ने खुशी के साथ अपने पति की बात मान ली। एक हफ़्ते के अन्दर पुजारी, उसकी पत्नी और बच्चों ने मिलकर मंदिर को साफ़ किया। देवी को नये वस्त्र पहना दिये, उसे खूब सजाया। इसके बाद एक दिन सवेरे मंदिर के जंग लगे घंटे को बजाया।

गाँव वालों को पता चल गया कि देवी के मंदिर में एक पुजारी पहुँच गया है और मंदिर का उद्धार हो गया है, तब उस गाँव के भक्त जन बड़ी श्रद्धा के साथ मंदिर में आने लगे। भक्तों से जो भेंट व उपहार मिलते थे; उनके द्वारा रामप्रसाद

राजेन्द्र कश्यप

का परिवार अपने दिन सुख पूर्वक बिताने लगा।

चार-पाँच महीने बीत गये। शुरू-शुरू में जो भक्त बड़े ही उत्साह के साथ मंदिर में आते थे, अब उनकी संख्या धीरे-धीरे घटने लगी। फिर से रामप्रसाद के बुरे दिन आ गये। एक दिन रात को उसने अपनी पत्नी से कहा कि जीविका की खोज में हमें गंगावती को छोड़ किसी दूसरे गाँव में जाना होगा। इसके बाद सब लोग सो गये।

आधी रात के वक़्त रामप्रसाद के सामने सपने में देवी प्रयक्ष हो गईं। भक्तिपूर्वक देवी के सामने घुटने टेककर पुजारी ने कहा—"माताजी, मुझ से कोई अपराध हुआ हो तो कृपया क्षमा कीजिए। मैंने अपने पेट भरने के लिए उजड़ी हालत में रहने वाले इस मंदिर का उद्धार किया। लेकिन मेरे सामने फिर से अपना पेट भरने का सवाल पैदा हो गया है। इसीलिए मैं इस गाँव को छोड़कर जाना चाहता हूँ। यदि मेरा इस गाँव को छोड़ जाना आप को पसंद नहीं है, तो मैं यहीं पर रह जाऊँगा।"

पुजारी की ये बातें सुन देवी मुस्कुरा उठीं और बोलीं—"तुमने मेरे मंदिर का उद्धार किया है; इसलिए तुम्हारे प्रति मेरे मन में वात्सल्य का भाव पैदा हो गया है। मैं तुम पर अनुग्रह करने आई हूँ! यह मंदिर कल सूर्योदय के समय तक ढहकर नीचे गिर जाएगा। तुम इसी वक़्त मेरी मूर्ति के नीचे खोद डालो। वहाँ पर मेरे वे सब आभूषण हैं जो इस मंदिर की उच्च दशा में मुझे पहना दिये गये थे; उन्हें ले जाकर तुम किसी गाँव में आराम से अपने दिन बिता दो। मैं अभी इस मंदिर को छोड़कर चली जा रही हूँ!" यों कहकर देवी अदृश्य हो गईं।

रामप्रसाद ने नींद से जागकर अपनी पत्नी को सपने का समाचार सुनाया।

दोनों ने मिलकर मूर्ति के नीचे खोद डाला। देवी के कहे मुताबिक़ बहुत से गहने उनके हाथ लगे। उन्हें सावधानी से बांध कर अपने दोनों बच्चों के साथ वे मंदिर से बाहर आये। उस समय सूर्योदय हो रहा था।

उसी वक़्त वहाँ पर तीन चोर आ पहुँचे। रामप्रसाद को छुरी दिखाकर धमकाते बोले—"तुम अपने हाथ की गठरी और बर्तन चुपचाप हमारे हाथ सौंप दो।"

देवी के अनुग्रह से इतने दिन बाद उसके हाथ जो संपत्ति लगी थी, उसके चोरों के हाथ लगते देख रामप्रसाद बड़ा दुखी हुआ। फिर भी उसने यह सोचकर अपने मन को ढाढ़स बंधवाया कि उस संपत्ति को भोगने की क़िस्मत उसके भाग्य में बदा नहीं है, वह चोरों के हाथ वह गठरी सौंपने को हुआ, तभी उसकी पत्नी ने झट से गहनों की गठरी छीन ली और मंदिर के अन्दर फेंक दिया। गठरी के नीचे गिरते ही उसके भीतर के सारे गहने तितर-बितर हो गये और आँखों को चकाचौंध करने लगे।

एक साथ इतना सारा सोना देखने पर चोरों की आँखें खुशी के मारे चमक उठीं। वे एक ही छलांग में मंदिर के अन्दर कूद पड़े। उसी समय सूरज की किरणें मंदिर पर फैल गई। दूसरे ही क्षण बड़ी ध्वनि के साथ मंदिर ढहकर गिर गया। तीनों चोर उस मलबे के नीचे दबकर मर गये।

रामप्रसाद देवी की महिमा पर आश्चर्य में आ गया। उसने मलबे को हटाकर गहने अपनी पत्नी के हाथ दे दिया और भक्ति भाव से कहा—"इस देवी की कृपा की वजह से ही तुम्हारे मन में वक़्त पर गहनों की गठरी को मंदिर के अन्दर फेंकने को सूझी; वरना यह संपत्ति हमारे हाथ न लगती।

इसके बाद उसने एक बार और भक्ति भाव से देवी का स्मरण किया। फिर अपनी पत्नी और बच्चों को साथ ले किसी दूसरे गाँव के लिए चल पड़ा।"
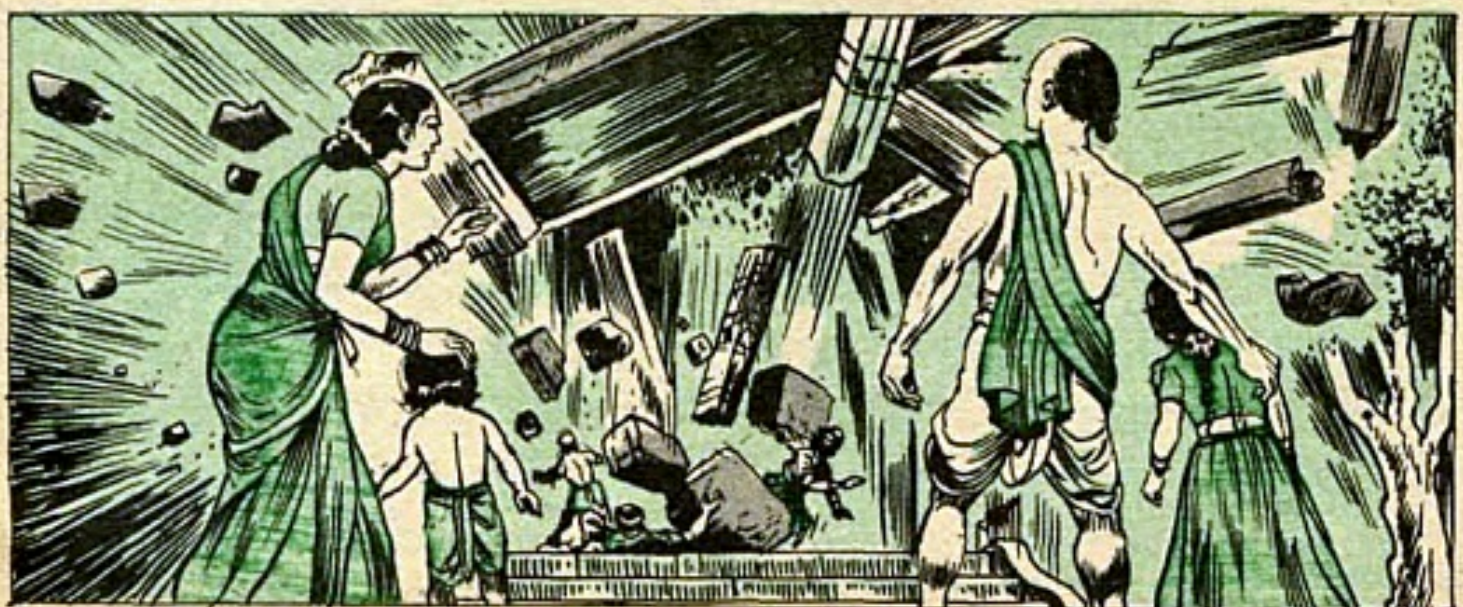
# भूतों की आँखमिचौनी

एक जंगल के निकट सोनपूर नामक एक गाँव था। उसमें विहारी नामक एक किसान था। एक ज़माने में विहारी का पिता अमीर था। खेतीबाड़ी में जब कोई ज़्यादा आमदनी न हुई, तब विहारी के पिता ने व्यापार शुरू किया। उसमें भी काफ़ी नुक़सान उठाया। आखिर मरते वक़्त वह विहारी केलिए एक एकड़ ज़मीन मात्र छोड़ गया।

पिता के मरने के बाद विहारी की माँ भी मर गई। इस पर विहारी की नानी ने उसे पाल-पोसकर बड़ा किया। नानी ने विहारी को समझाया कि वह खेतीबाड़ी में मन लगा कर मेहनत करे, मगर विहारी ने उसकी बातों की परवाह न की। उल्टे वह आवारागर्दी करने लगा।

अखिर विहारी की नानी ने सोचा कि शादी करने पर विहारी सही रास्ते पर आएगा। इसलिए वह शादी के रिश्ते ढूंढ़ने लगी। इस बात की खबर लगते ही विहारी के दिमाग में कोई बात सूझी।

विहारी के मकान के पड़ोस में रामनाथ नामक एक किसान था। उसकी बेटी विशाली बचपन में विहारी के साथ एक ही पाठशाला में पढ़ती थी। उसकी माँ का देहांत हो गया था, पर विशाली घर के काम-काज में बड़ी कुशल थी। विहारी ने अपने मन में यह निश्चय कर लिया कि अगर शादी करनी ही है तो विशाली के ही साथ करनी है।

एक दिन विहारी ने रामनाथ के घर जाकर अपनी इच्छा प्रकट की। इस पर रामनाथ गुस्से में आकर बोला—"तुम जैसे आलसी आदमी के लिए शादी ही क्यों? तुम्हारे पिता जो एक एकड़ ज़मीन छोड़ गये हैं, उसे बचाये रखो।"

गायत्री टंडन

रसोई घर में से विशाली ने अपने पिता की बातें सुनीं। अपमानित होकर विहारी घर लौटा, पर उसे नींद न आई। जिंदगी के प्रति उसके मन में विरक्ति पैदा हो गई। जंगल में किसी साँप या खूँख्वार जानवर के मुँह में जाने के ख्याल से घर छोड़कर वह जंगल की ओर चल पड़ा।

अंधेरे में वह बड़ी दूर तक चलता गया, पर उसे कहीं खूँख्वार जानवर दिखाई न दिये, लेकिन बाजूवाले पेड़ों के पीछे किसी के आँख मिचौनी खेलने की आवाज़ सुनाई दी। विहारी पल भर केलिए काँप उठा और वह एक पेड़ के नीचे जा खड़ा हुआ।

एक डरावनी भूतनी अपने बच्चे भूत की आँखें दोनों हाथों से बंदकर चिल्ला उठी—"आंख मिचौनी पहचान लो।" तीन छोटे भूत छिपने के लिए पेड़ों की ओट में दौड़ गये। भूतनी ने जब छोटे भूत की आँखों पर से हाथ हटाया, तब वह छिपे हुए भूतों की खोज में चल पड़ा।

वह पेड़ों की ओट में दुबकते थोड़ी दूर पहुँचा, विहारी को देख चीख कर गिर पड़ी—"बाप रे बाप, कोई आदमी है!"

दूसरे ही क्षण बाक़ी भूत दौड़ कर आ पहुँचे और विहारी को पकड़ लिया। विहारी जान के डर से बेहोशी की हालत में आया।

बड़ी भूतनी ने विहारी की ओर अचरज के साथ देखा। फिर बच्चे भूतों को दूर ले जाकर खेलने का आदेश दिया, बोली—

"यह तो भूत-पिशाचों के घूमने का वक़्त है। इस समय में तुमने जंगल के बीच प्रवेश करने की कैसी हिम्मत की? अगर तुम सच्ची बात बताओगे तो मैं तुमको छोड़ दूंगी। झूठ बोलोगे तो तुम्हें मेरे बच्चों को जिन्दगी-भर एक गधे की तरह ढोते हुए इसी जंगल में रहना पड़ेगा।"

भूतनी की बातें सुनने पर विहारी के मन में थोड़ी हिम्मत आ गई। उसने भूतनी को अपनी गरीबी की हालत सुनाई, फिर उसे यह समाचार भी बताया कि वह विशाली के साथ शादी करना चाहता है, लेकिन उसके पिता रामनाथ ने उसका अपमान किया है। फिर अपनी हालत समझाई—"अगर मैं एक अमीर होता तो क्या रामनाथ मेरा अपमान करता? विशाली जब मेरी पत्नी नहीं बन सकती तो मेरे जीने से क्या फ़ायदा? मैं ज़िंदगी की आशा छोड़कर ही इस अंधेरी रात में जंगल में आ गया हूँ।"

"उफ़, यही बात है? किसी से तुम मेरे पास कहला भेजते तो मैं धनभेज देती।" इन शब्दों के साथ भूतनी ने एक पेड़ के खोखले में से एक चमड़े की थैली निकाली, मुट्ठियों से भर कर सोने के सिक्के थैली में भर दिये, उस थैली को विहारी के हाथ देते हुए बोली—"मैं यक़ीन करती हूँ कि तुम सच बोलते हो। यह सोना ले जाकर तुम अपने मन पसंद की लड़की के साथ शादी करके आराम से अपने दिन बिताओ।"
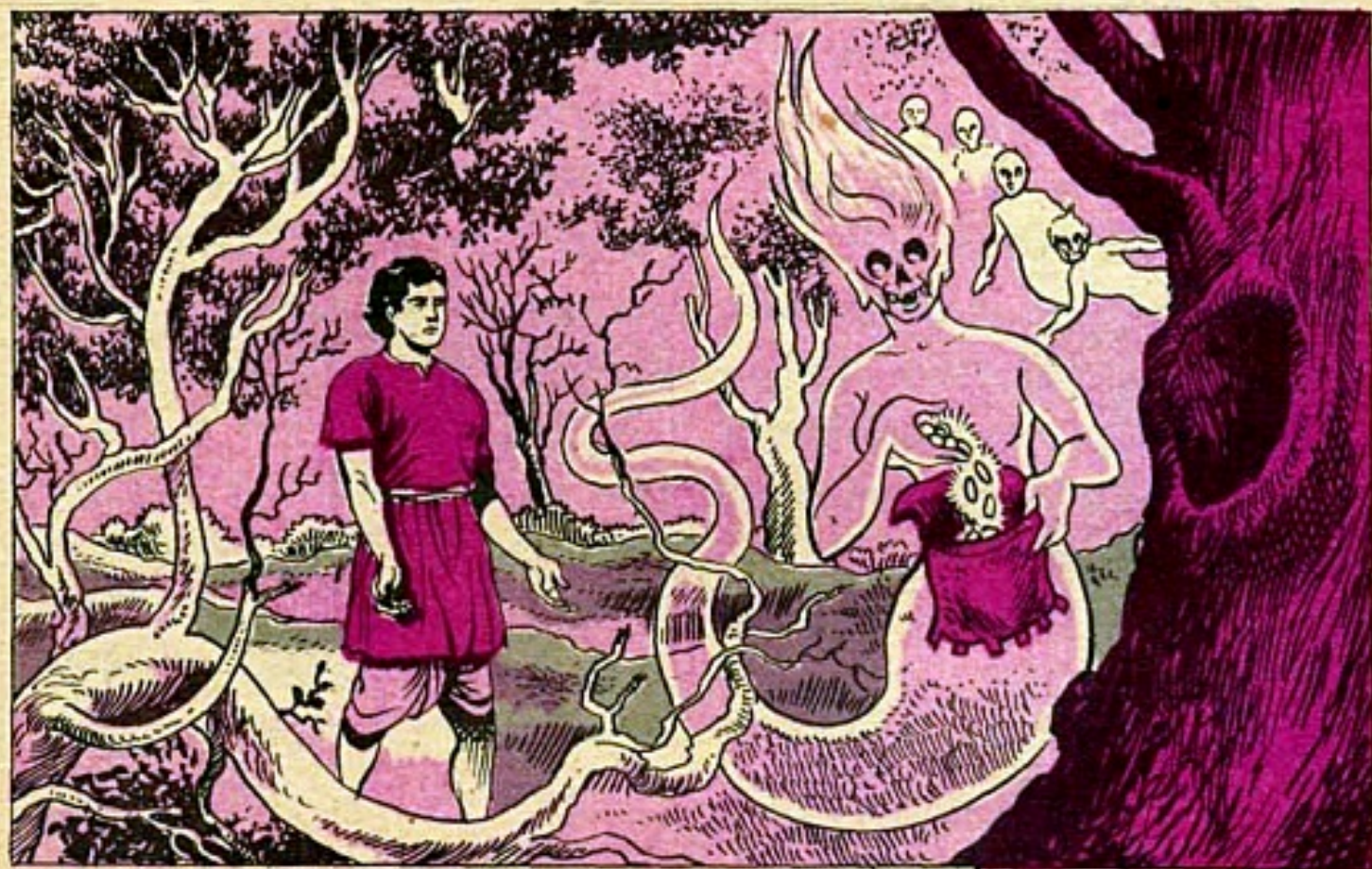
बिहारी ने झुक कर भूतनी को प्रणाम किया और अपने घर की राह ली। उसके गाँव पहुँचते-पहुँचते सवेरा हो गया।

बिहारी सीधे रामनाथ के घर पहुँचा, धन की थैली उसे दिखाकर बोला—"आपने मेरे आलसीपन की बड़ी अवहेलना की है। लीजिये, थैली-भर कर ये सोने के सिक्के लाया हूँ। इन्हें देखने पर आप की आँखें चौंधिया जायेंगी, मैं समझता हूँ कि अब विशाली के साथ मेरी शादी करने में आप को कोई आपत्ति न होगी।"

रामनाथ अचरज में आ गया, चमड़े की थैली खोलकर देखा। दूसरे ही क्षण 'बुस' ध्वनि के साथ थैली में से हवा बाहर निकल गई। थैली एक दम खाली थी।

"छी: छी:। इस में हवा को छोड़ कुछ नहीं है।" यों खीझते हुए रामनाथ ने थैली दूर फेंक दी।

बिहारी चकित रह गया, थैली हाथ में लेकर उसके अन्दर देखा। थैली में सोने के सिक्के न थे। "यह कैसा जादू है? इस थैली में भूतनी के हाथों से सोने के सिक्के भरते मैंने अपनी आँखो से देखा है।" यों कहते उसने रोनी सूरत बनाई।

"अरे झूठ भी बोलो तो यक़ीन करने लायक़ हो। चलो, मेरे सामने बहुत सारे काम पड़े हैं।" यों रामनाथ खीझ उठा।

विशाली किवाड़ की ओट में खड़े हो यह सारा तमाशा देख रही थी। बिहारी सर खुजलाते बोला—"भूतनी भी हो तो क्या ऐसी दगाबाजी? आज ही रात को एक बार और जंगल में जाकर उसका जूड़ा खींच कर पूछ लेता हूँ।" ये शब्द कहते बिहारी अपने घर की ओर चल पड़ा।

उस दिन रात को बिहारी ने जंगल में पहुँच कर देखा, भूत पहले जैसे आँख मिचौनी खेल रहे हैं। बिहारी भूतनी के पास पहुँचा और गरज कर बोला—"तुम तो पक्का दगाबाजिन हो? सोने का बहाना करके थैली में हवा भर कर दे दी?"

भूतनी अपनी हँसी को रोकते हुए बोली– "तुम आँखमिचौनी का खेल जानते हो न ? इस खेल में सामने वालों की आँखें बंद कर खोलने के पहले गायब हो जाते हैं। मैंने भी तुम्हारे साथ आँखमिचौनी खेली है। तुम निराशा में पड़ कर आत्म हत्या करने के लिए इस जंगल में आये ; तुम्हारा आवेश कम करने के लिए ही मैं ने तुम्हें झूठ-मूठ का सोना भेंट किया। आदमी आत्महत्या करके अपनी ज़िंदगी में कुछ साध नहीं सकता । सिवाय हमारे जैसे भूतों की ज़िंदगी बिताने के। अब भी सही, तुम आँखें खोलो। घर जाकर अपनी एक एकड़ जमीन के साथ थोड़ी जमीन और ठेके पर ले लो, खेतीबाड़ी करते आराम से अपनी ज़िंदगी बसर करो। कोई भी औरत अपने पति को मेहनत करके कमाने पर ही उसका आदर करेगी, पर किसी भूत के यहाँ से धन लाने वाला हो या आलसी हो तो कभी वह उसकी इज्जत न करेगी।"

भूतनी के मुँह से ये बातें सुनने पर विहारी के मन में अपनी आवारा ज़िंदगी पर घृणा हुई। उसके मन में ज्ञानोदय कराने वाली भूतनी को वह प्रणाम करने को हुआ, पर इस बीच वह गायब हो गई थी।

विहारी वहाँ से निकल कर घर पहुँचा तब दर्वाजे पर खड़ी विशाली ने उससे पूछा–"ओह, तुम धन की भीख माँगने के लिए इस आधी रात के वक़्त भूतों के पास हो आये हो ?" विहारी चौंक कर बोला–"यह सब मेरी पहले की ज़िंदगी है। आज से मेहनत करके खेतीबाड़ी करूँगा।"

विशाली कुछ कहने जा रही थी, तभी रामनाथ घर के अन्दर से बाहर आया और बोला–"अरे मूर्ख, तुम्हारे अन्दर यह अक़्ल पहले से ही होती तो मैं खुद तुम्हारी नानी के यहाँ जाकर कभी निवेदन करता कि तुम अपने नातिन के साथ मेरी लड़की का विवाह कर लो।"

रामनाथ के मुँह से यह निर्णय सुनकर विहारी के साथ विशाली भी खुशी से फूल उठी।

# बिना ब्याज का कर्ज

धर्मपुरी का महाजन चण्डीदास आसपास के गाँवों में इस बात के लिए बड़ा ही मशहूर था कि वह लोगों से कस कर ब्याज वसूल करता है, जिससे कई परिवार तबाह हो गये हैं।

एक बार देवनाथ नामक एक गृहस्थ चण्डीदास के घर पहुँचा और अपनी बेटी की शादी के लिए एक हज़ार रुपये क़र्ज मांगा। देवनाथ धर्मपुरी का ही निवासी था, इसलिए चण्डीदास उसकी जायदाद के बारे में अच्छी जानकारी रखता था।

चण्डीदास बोला–"तुम्हारे पास सिवाय एक झोंपड़ी के जायदाद के नाम पर कुछ भी नहीं है। तुम जो एक हज़ार रुपये क़र्ज मांगते हो, उस मूल धन की बात छोड़ दो, उसका ब्याज भी तुम कभी चुका नहीं सकते। तुम्हारी झोंपड़ी की क़ीमत दो सौ से ज़्यादा न होगी। इसलिए तुम कभी मेरे यहाँ कर्ज मांगने की हिम्मत करके न आओ।"

क़र्ज देने से दूर, उल्टे अपनी गरीबी की खिल्ली उड़ाते देख देवनाथ मन ही मन चण्डीदास को गालियाँ सुनाते घर की ओर चल पड़ा, रास्ते में गाँव के मुखिये से उसकी मुलाक़ात हो गई।

देवनाथ ने उसे अपनी हालत सुनाई। मुखिया स्वभाव से अच्छा आदमी था। वह सारे गाँव वालों को सुखी देखने की इच्छा रखने वाला था। उसने सोच-समझ कर देवनाथ को एक उपाय बताया और समझाया–"अगर मेरा उपाय सफल हुआ तो कई लोगों का लाभ होगा, पर किसी का नुक़सान न होगा। इस से चण्डीदास को नी एक सबक मिलेगा।"

एक हफ़्ते बाद देवनाथ को फिर अपने घर आये देख चण्डीदास अनिच्छा पूर्ण

अशोक गुप्त

चेहरा बना कर कुछ कहने को हुआ, इस बीच देवनाथ खुद बोल उठा–"यह मेरी बेटी की शादी की बात नहीं और न एक हज़ार रुपये क़र्ज की ही। गाँव के मुखिये ने मुझे बताया है कि राज दरबार में एक अच्छे पद पर रहनेवाले उनके मित्र को दो हज़ार रुपये रिश्वत देने पर वे मेरे बेटे को मासिक छे सौ रुपये की तनख्वाह पर नौकरी दिलानेवाले हैं, ब्याज की मैं फ़िक्र नहीं करता, आप जो भी माँगे दे दूंगा, मेहर्बानी करके दो हज़ार रुपये दीजिए।"

चन्डीदास पल भर के लिए चकित रहा, फिर थोड़ी देर सोचता रहा, तब देवनाथ को ड़ांट कर भिजवा दिया। एक घंटे बाद वह खुद गाँव के मुखिये से मिलने गया।

"महाशय, मुझे हाल ही में मालूम हुआ है कि राजदरबार में आप के परिचित एंक मित्र हैं। मेरे ब्याज के व्यापार में कई तरह के लेन-देन चलते हैं। इसलिए मैं सोचता हूँ कि राजदरबार में मेरे एक हितैषी का होना जरूरी है। मैं आप को दो हज़ार रुपये दूंगा, आप इसे चाहे रिश्वत मानिये या पुरस्कार। मेरे बेटे को क्या आप वहाँ पर कोई नौकरी दिलवा सकते हैं?" इन शब्दों के साथ चण्डीदास ने दो हज़ार रुपयों की थैली मुखिये के आगे रख दी।

मुखिये ने दर्प के साथ सर हिला कर कहा–"अच्छी बात है, मैं कोशिश करूँगा; मगर काम बनेगा या नहीं, इस का निर्णय

करने में छे महीने या एक साल भी लग सकता है ।"

"जैसी आपकी मर्ज़ी !" यों कहकर चण्डीदास वहाँ से चला गया ।

मुखिये ने दूसरे ही दिन देवनाथ को एक हज़ार रुपये दिये, बाकी हज़ार रुपये कम ब्याज पर एक ऐसे किसान को उधार में दिये, जो एक जोड़ा बैल खरीदने केलिए रुपयों के अभाव में परेशान था ।

इसके बाद चण्डीदास कई बार मुखिये के घर का चक्कर लगाते हुए बराबर उन्हें याद दिलाता रहा कि उसके लड़के की नौकरी की बाबत क्या हुआ है ? हर बार मुखिया यही बात समझा कर चण्डीदास को भेजता रहा कि उनका मित्र पूरी कोशिश कर रहा है, काम के बनने की संभावना है, मगर थोड़ी देरी हो सकती है ।

एक साल बीत गया । मुखिये के हाथ से जिस किसान ने एक हज़ार रुपये उधार लिया था, उस ने रुपये लौटाते हुए कहा– "आपने विपत्ति के वक़्त मेरी मदद की । मैं ऐन वक़्त पर बैल खरीद पाया । मेरी खेती-बाड़ी में काफी फ़ायदा हुआ । आपने जो एक हज़ार दिया, उस के ब्याज के साथ थोड़े से और रुपये जोड़ कर कुल दो हज़ार रुपये दे रहा हूँ ; ले लीजिए ।"

इस के बाद दूसरे दिन मुखिये ने चण्डीदास को बुलवा कर रुपये लौटाते हुए कहा– "मेरे मित्र ने बहुत कोशिश की, लेकिन काम न बना । तुम्हारे ये दो हज़ार रुपये वापस ले लो ।"

चण्डीदास को मुखिये पर शक हुआ । वह जब घर लेटने लगा, तब रास्ते में देवनाथ से उसकी मुलाक़ात हुई ।

चण्डीदास ने देवनाथ को मुखिये का समाचार सुनाकर कहा–"मैं आज तक मुखिये को एक बुज़ुर्ग समझ रहा था; साल-भर मेरे दो हज़ार रुपये उधार में देकर ब्याज कमाया होगा ।"

देवनाथ मंद-मंद मुस्कुराते अपने रास्ते आप चला गया ।
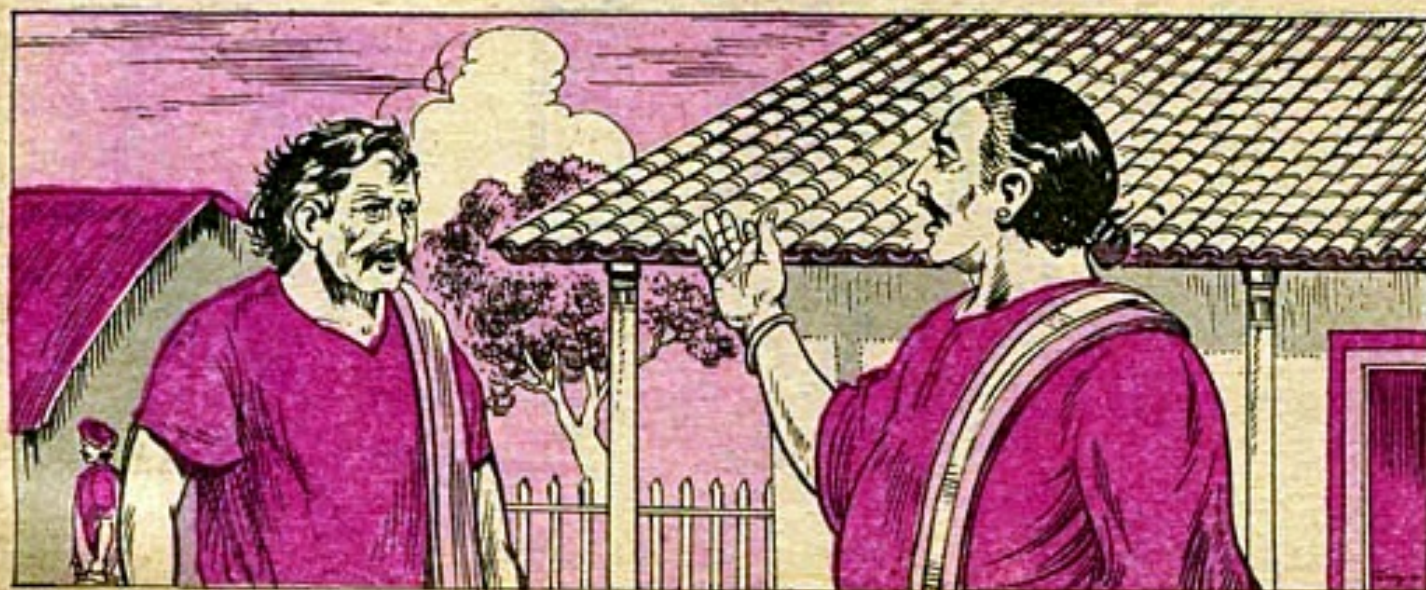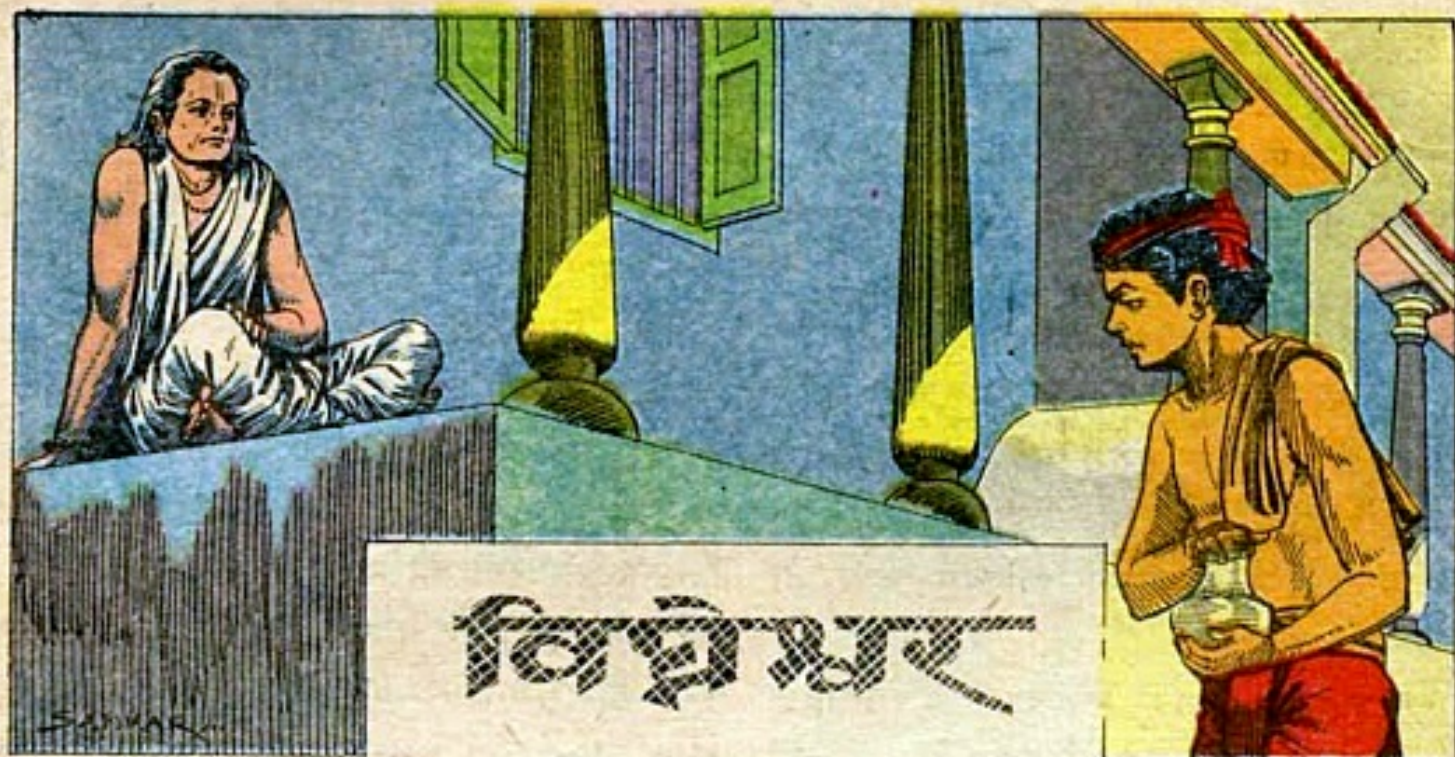
गजानन पंडित के घर में कामधेनु जैसी एक अच्छी दुधारू गाय थी। नंद नामक युवक उसे चारा-पानी देते गजानन पंडित को रोज गाढ़ा दूध दुहकर दिया करता था। कुछ दिन बाद स्वर केसरी ने नंद को फुसला कर अपने वश में करके उसे अपनी योजना बताई।

गणपति-नवरात्रि के उत्सवों के संदर्भ में गजानन की पत्नी अपनी बेटी, दामाद और पोता गणेशभट्ट को लिवा लाने समीप के कल्याणीनगर में गई, लेकिन किसी वजह से उनके आने में देरी हो गई।

गजानन के मधुर संगीत को सुनने केलिए दूर-दूर के गाँवों से श्रोता वातापि नगर में पहुँचने लगे। उसी दिन उत्सव का प्रारंभ होने वाला था। वातापि नगर के मंदिर के अहाते में गजानन को पहला गीत सुनाने का दिन था। वह विनायक चतुर्थी का दिन था। उस दिन नंद ने बड़े सवेरे उठकर स्वर केसरी के कहे मुताबिक़ लोटे में भरे पानी में उसी वक़्त दुहकर लाया गया दूध डाल दिया और सीधे लोटा ले जाकर गजानन के हाथ दे दिया।

गजानन मिलावट वाले दूध को देख चकित रह गया और पूछा-"नंद, यह कैसी बात है? आज तुम पहली बार दूध में पानी मिलाकर लाये हो?" इस पर नंद ने झट जवाब दिया-"मैं गणेशजी की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैंने दूध में पानी नहीं मिलाया है।"

गजानन के सामने हमेशा विनयपूर्वक व्यवहार करने वाला नंद आज निडर हो कर चिल्ला रहा था, उसके इस व्यवहार पर चकित हो रास्ते से आने-जाने लोग जमा हो गये। उस गली में किसी काम से गुजरने वाले जैसे अभिनय करते स्वर केसरी रुक गया और मन ही मन मुस्कुराते उस दृश्य को देखता रहा।

पंडित गजानन खीझ कर बोला–"अरे नंद, तुम शपथ करने पर तुल गये? शपथ करो, देखें।"

जब शपथ करने की नौबत आ गई, तब नंद घबरा कर चारों ओर नज़र दौड़ाने लगा, इस पर गजानन पंडित ने गरज कर डांटा–"अरे, इधर-उधर देखते क्या हो? शपथ क्यों नहीं करते?"

गजानन की यह डांट सुनकर नंद और घबरा गया। दूर पर खड़े यह तमाशा देखने वाला स्वर केसरी बड़े बुजुर्ग की तरह नजदीक आया, और बोला–"अरे, बात कहने से हो गया? शपथ कर लो न! तुमने जो कहा, उसे फिर से ठीक से कहो और दिया बुझाओ! डरते क्यों हो?" यों उसे ढाढ़स बंधाते हुए स्वर केसरी ने उसकी ओर आँख का इशारा किया।

नंद की हिम्मत बंध गई। वह सामने वाले कमरे में गणेश की प्रतिमा के सामने पहुँचा, जलने वाले दीपक के सामने खड़े हो डरते-डरते मंद स्वर में बोला–"यदि मैंने दूध में पानी मिला दिया हो, तो मेरे दोनों हाथ सुन्न हो जाय, वरना मुझ पर संदेह करने वाला स्वर मूक हो जाये।"यों कह कर नंद ने दीपक बुझाया और ज़बर्दस्ती आँखें बंद कर लीं।

इस पर गजानन का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। उसका कंठ मूक हो गया।

वहाँ पर इकट्ठे हुए लोग ये शब्द कहते अपनी सहानुभूति जताने लगे–"उफ़, यह क्या हो गया?" तभी स्वर केसरी बोल उठा–"शपथ कराना हंसी-मजाक थोड़े ही

है ?" स्वर केसरी की कंठध्वनि सुनकर नंद ने आँखें खोलीं। अपने हाथों को टटोल कर देखा, उनको सही हालत में देख खुश होते हुए जल्दी जल्दी वह स्वर केसरी के पास जा खड़ा हुआ।

उसी वक़्त बाल गणेशभट्ट दौड़ते आ पहुँचा, बोला—"नानाजी, गाड़ी से उतर कर मैं दौड़ते हुए आया। नानीजी वगैरह गाड़ी में आ रहे हैं।" यों कहते अपने नाना की हालत देख वह विस्मय में आ गया, वहाँ पर इकट्ठे लोगों के मुँह से सारा हाल जानकर कमर पर हाथ रखे ठाठ से खड़े हो चिल्ला उठा—"नंद, रुक जाओ।"

स्वर केसरी के साथ लौटने वाला नंद अचानक रुक गया, पर वह कमरे में दीप को जलते देख चकित रह गया।

"ऐसा मालूम होता है कि तुमने ठीक से दीपक नहीं बुझाया। हम भी तो देखें, फिर से शपथ कर लो।" आदेश देने वाले स्वर में बाल गणेशभट्ट ने कहा।

स्वर केसरी ने नंद की पीठ पर धीरे से धक्का देकर इस तरह उसे ढकेला, जिसका मतलब था कि नंद, डरो मत। जाकर शपथ खा लो।"

बाल गणेश भट्ट ने कठोर स्वर में कहा—"नंद, ठीक से सुन लो। तुम यह शपथ लेकर दीपक बुझाओ कि मैंने अगर पानी में दूध मिलाकर दिया हो, तो मेरे हाथ गिर जाये। हाँ, जल्दी करो।"

ये शब्द सुनते ही नंद के बदन से पसीना छूटने लगा। वह थर-थर कांपते हुए बोला—"बाप रे बाप, मैं ऐसी शपथ न लूँगा। स्वर केसरी के कहे मुताबिक़ मैं पानी में दूध डाल कर ले आया। मैंने यह शपथ खाई जरूर कि मैंने दूध में पानी नहीं मिलाया है। बस, मुझे बचाइये।" यों कहते नंद ने पानी में दूध डाला, तब लोटे में गाढ़ा दूध लाकर बाल गणेश भट्ट के आगे रख दिया, और इस तरह उसके आगे गिर पड़ा, मानो घुटने टेक रहे हो। वहाँ पर एकत्रित लोग कह कहे लगा कर

हँसने लगे, इस पर स्वर केसरी वहाँ से चुपके से खिसक गया। कुछ लोग उसका पीछा करने लगे।

गणेशभट्ट ने लोगों की ओर मुड़ कर कहा–"आप लोग देख रहे हैं न? ये शपथ खाने वाले और इनके पीछे रह कर शपथ कराने वाले ज़्यादातर भोले होते हैं। साथ ही कुछ लोग बात बदलते सत्य को उलटने वाले द्रोही होते हैं। ये लोग भोले लोगों को दगा देने वाले चंट हैं।"

'हाँ, हाँ, तुम तो बालक हो; फिर भी तुमने खूब कहा। तुमने सब की आँखें खुलवा दीं।" यों उस बालक की तारीफ़ करने लगे। उसी वक़्त, गजानन पंडित को बोलते देख सब लोग प्रसन्न हो वहाँ से चले गये।

गणेश भट्ट अपने नाना के समीप जाकर बोला–"नानाजी, आप तो एक दम सीधे-सादे और बिना घमण्ड वाले पंडित होकर इस तरह के शपथ के गयाजाल में फँस गये हैं? यह तो मुझे बड़ी अचरज की बात मालूम होती है।"

गजानन ने बालक को अपनी गोद में लिया, आँखें बंद करके बोला–"हाँ, गणेश, तुम ठीक कहते हो।" तभी एक गाड़ी आकर घर के सामने रुकी।

गजानन ने आँखें खोलकर देखा, बालक वहाँ पर न था। उसी वक़्त गाड़ी पर से गणेशभट्ट को नीचे कूदते गजानन ने देखा। उसका चेहरा एक ज्योति की भांति चमक उठा। वह "गणेश, गणेश!" पुकारते बड़ी खुशी के साथ आनंद भैरवी का राग आलपने लगा। पावनमिश्र ने कहानी सुनाना बंद कर पूछा–"बच्चो, तुम लोग बताओ, पहले जो गणेश भट्ट आया था, वह कौन था?"

बच्चे, बड़े, सभी लोग उत्साह में आकर एक स्वर में बोल उठे–"और कौन हैं? हमारे विघ्नेश्वर ही। वातापि गणपति ही थे।"

पावनमिश्र ने कहानी सुनाना फिर शुरू किया–"नानाजी!" कहते गणेश भट्ट

हाथ फैला कर गजानन पंडित की ओर दौड़ता आ रहा था। पंडित ने अपने हाथ फैला कर "गणेश!" पुकारते उसे ऊपर उठाया, बोला—"गणेश! हम पर विघ्नेश्वर का अनुग्रह हुआ है। तुम्हारे रूप में आकर उन्होंने हमारे घर को पावन किया है। यह घर तो गजानन का मंदिर है।" यों कह कर साठ साल का वह पंडित उत्साह में आकर बच्चे की तरह नाचते आनंद भैरवी राग में गाने लगा—"तांडव नृत्य करी गजानन, धिमिकिट" यह गीत घंटे की ध्वनि की भांति सारे नगर में गूंज उठा।

उस आनंद की चरम सीमा में स्वर केसरी दौड़ा दौड़ा आ पहुँचा, गजानन पंडित के पैरों से लिपट कर सर टिकाये बोला—"गुरुदेव, मैं तब तक आप के पैर न छोड़ूंगा जब तक आप मुझे क्षमा न करेंगे।"

गजानन होश में आया, स्वर केसरी के हाथ पकड़कर ऊपर उठाकर फिर बोला—"स्वर केसरी, हम लोग सिर्फ़ निमित्त मात्र हैं। यह सब उस गजानन की लीला है। तुमने शास्त्र-विधि से संगीत का मंथन किया है। मैंने भक्ति और ममता को महत्व दिया। मेरा विश्वास है कि भक्ति से जुड़ने पर ही संगीत उत्तम श्रेणी को प्राप्त होता है। बस! आज से स्वर्ण गणेश की सारी प्रतिमाएँ तुम्हारे अधीन होंगी। मैं ये सब सत्कार और सम्मान नहीं चाहता और आइंदा मैं किसी सभा-समारोह में अपना संगीत नहीं सुनाऊँगा।"

यह जवाब सुनकर बालक गणेश भट्ट बोला—"नानाजी, आप सिर्फ़ अपने आत्म-संतोष केलिए घर के अन्दर गाते रहेंगे तो क्या होगा? लोगों के दिलों में अच्छी अभिरुचि, आनंद, ममता और भक्ति पैदा करने पर ही आप का पांडित्य सार्थक होगा।"

इसपर गजानन हाथ जोड़ कर बोला—"हे विघ्नेश्वर! ये शब्द आप खुद मेरे नाते के मुँह से कह रहे हैं। आज तक मैंने
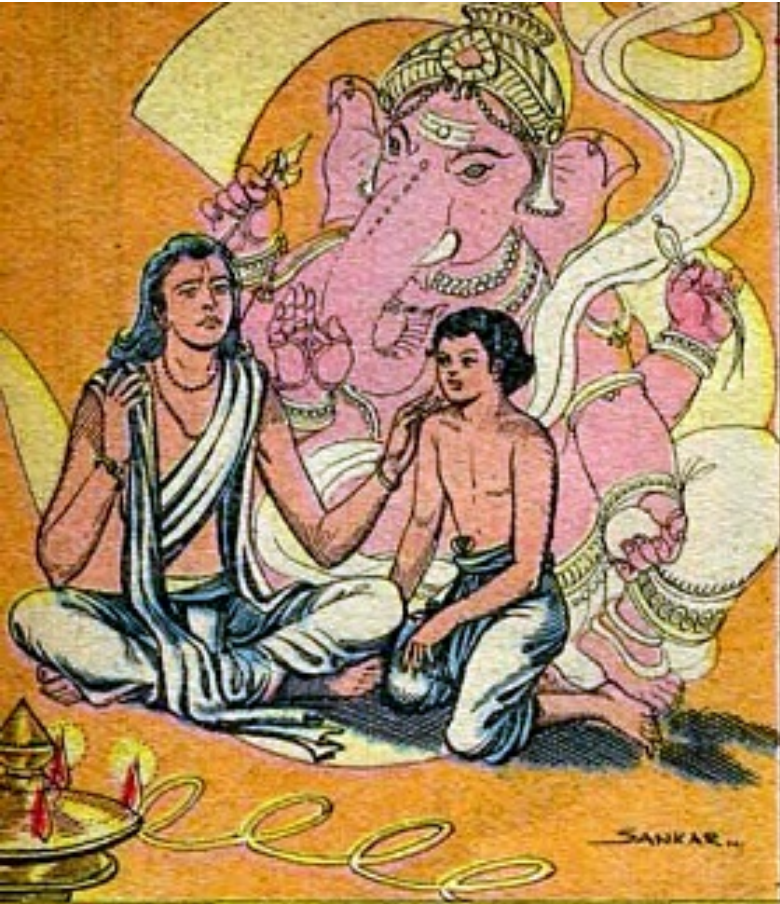
आप के कहे अनुसार संगीत सुनाया है। आइंदा में आप के आदेशानुसार आप का यशोगान करूँगा! आप श्रोताओं के हृदयों में नर्तन कीजिए। पर इस बात का आप ध्यान रखें कि मुझे आइंदा सत्कार व सम्मान प्राप्त न हो।"

गजानन पंडित अब साठ साल के हो चुके थे, इस पर उनके मना करते रहने पर भी उस दिन शाम को वातापि गणपति के मंदिर के अहाते में एक भारी सभा का इंतज़ाम हुआ। फूलों की वर्षा के बीच गजानन पंडित की षष्ठि पूर्ति का उत्सव बड़े ही ठाठ से मनाया गया। गजानन पंडित ने हाथ जोड़ कर कहा–

"कई महानुभावों ने संगीत और कविता को भक्ति के वास्ते समर्पित किया, उसी को उत्तम मार्ग बताया। मैंने उसी मार्ग पर विश्वास किया। उन सब महात्माओं के प्रति मैं अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ। इसके अतिरिक्त मेरे अन्दर कोई विशेषता नहीं है।" इन शब्दों के साथ गजानन ने अनेक राग मालिकाओं के साथ विघ्नेश्वर की स्तुति करते अपना अमृत मय संगीत सुनाया। उस दिन श्रोताओं के हृदयों में जो विघ्नेश्वर प्रवेश कर गये, वे सदा के लिए नर्तन करते रह गये।

वातापि नगर के इतिहास में गजानन पंडित का नाम स्वर्ण अक्षरों में सदा केलिए अंकित होकर रह गया।" इन शब्दों के साथ पावन मिश्र ने अपनी कहानी समाप्त की।

एक दिन बहुत से बच्चे और उनके पीछे खड़े होकर बड़े लोग भी एक चित्र की ओर विचित्र ढंग से देख रहे थे। उस चित्र में एक अनोखा भूत जंतु चित्रित था। उसी समय पावनमिश्र मण्डप में प्रवेश कर रहा था। उसने बच्चों के कुतूहल का कारण जानकर कहा–"बच्चो, मैं तुम लोगों को इस चित्र की कहानी सुनाता हूँ। तुम सब लोग बैठ जाओ।"

इसके बाद कहानी शुरू कर दी:
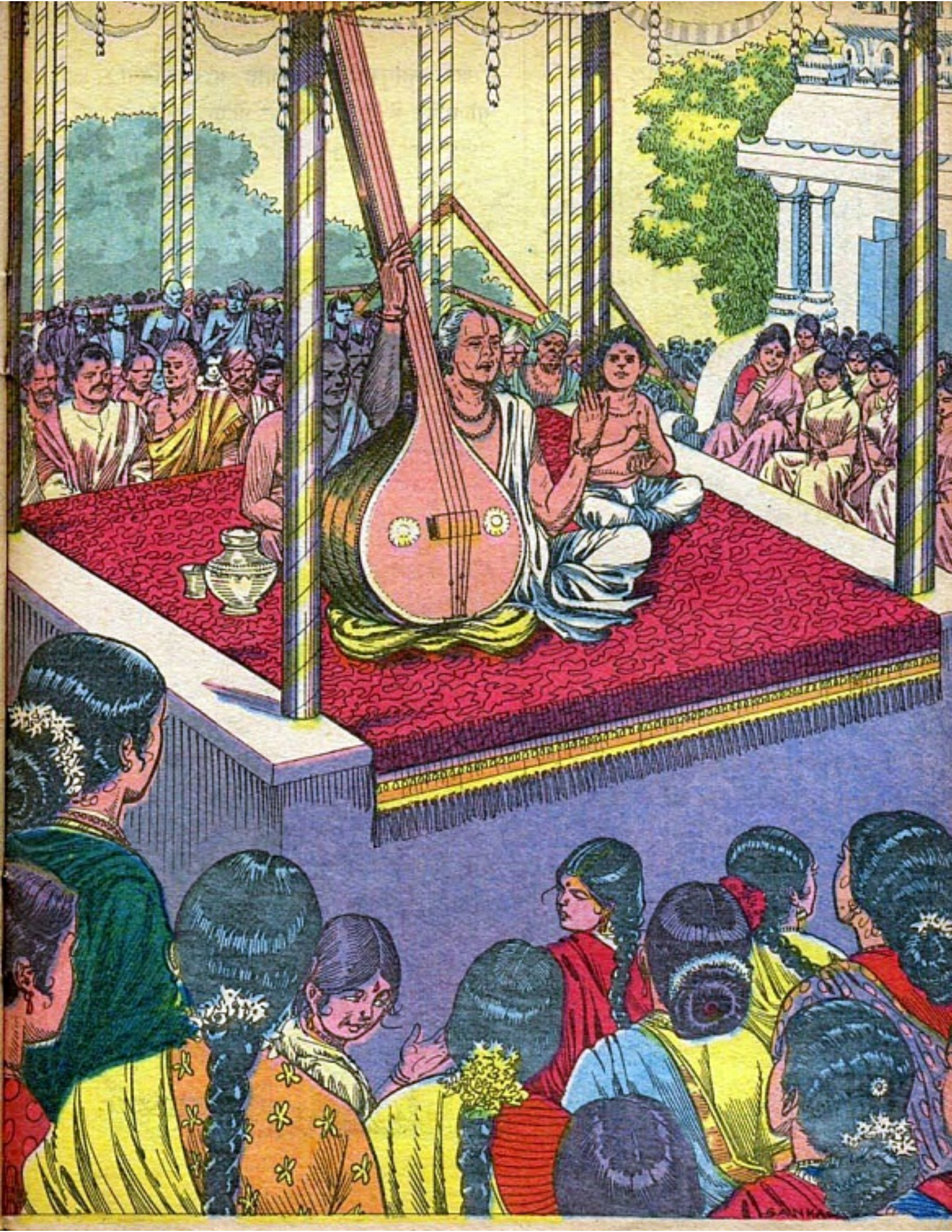
"इंद्र ने सगर चक्रवर्ती के यज्ञ के घोड़े को छिपाया। उस चक्रवर्ती के यज्ञ को पूरा होने से रोकते हुए वे घोड़े को चुरा ले गये और रास्ते में अनेक दुष्ट कार्य और अत्याचार किये।

सगर चक्रवर्ती के वंशज अभिनंदन ने इंद्र को हिस्सा दिये बिना एक महा यज्ञ शुरू किया। इस पर वे क्रोध में आ गये, यम को सुख भोगों के द्वारा तृप्त करके अभिनंदन के यज्ञ को ध्वंस करने भेजा।

काल यम काल का अधिपति हैं। प्राणियों के जीवन और मरण के वे ही कारणभूत हैं। काल को काल यम और काल धर्म भी पुकारते हैं।

काल यम यज्ञ पुरुष के अंदर प्रवेश कर गये और अभिनंदन के यज्ञ की अग्नि में से एक पहाड़ के बराबर भयंकर जंतुभूत को पैदा किया। उसे देख डर के मारे ऋत्विज और अध्वर्यु तितर-बितर हो भाग गये। इस तरह यज्ञ वाटिका ध्वस्त हो गई। राजा अभिनंदन गणेशजी के भक्त थे। उनके गुरु वशिष्ट ने कहा–"महाराज, इस तरह का विघ्न पैदा हो सकता है, यह सोच कर मैंने होम कुंड के सामने बहुत बड़ा स्वस्तिक वाला आसन लगवाया। स्वस्तिक तो गणेशजी का संकेत चिह्न है। आप गणेशजी की प्रतिमा के रूप में हल्दी का ढेला स्वस्तिक केन्द्र में रखकर उसे प्रणाम कीजिए। वह स्वस्तिक विघ्न का निर्मूल करेगा।"

राजा ने ऐसा ही किया।

उस स्वस्तिक रंगोली के केन्द्र से एक अद्भुत प्रकंपन के साथ कोई नाद निकल पड़ा। उसके भीतर से असंख्य अणु ऊपर उठे और उस महान जंतुभूत को घेर लिया। वे अणु बढ़ते-बढ़ते चूहों के रूप में बदल गये। कई रंगों में चमकने वाले चूहे उस जंतु भूत को घेर कर काटने लगे। आखिर उस भूत के सारे बदन में घाव हो गये। वह भूत थोड़ी देर तक मृत जानवर के जैसे छटपटाता रहा, मरने का दृश्य पैदा कर अचानक गायब हो गया।
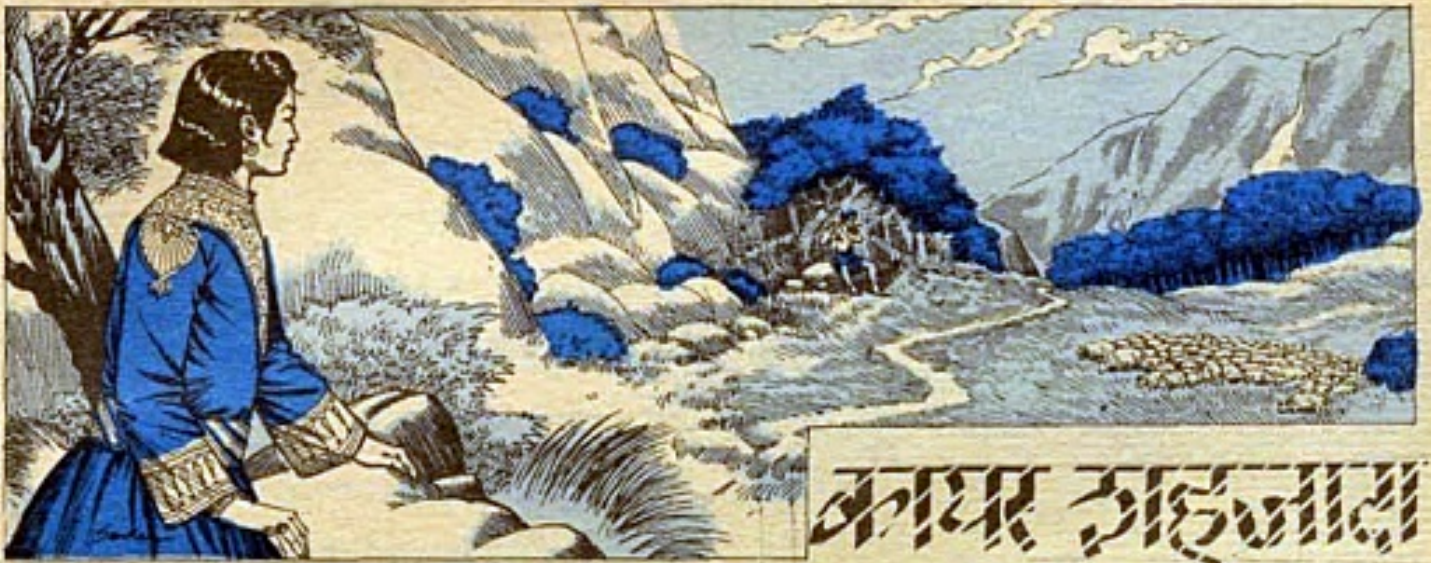
# कायर शहजादा

सैकड़ों साल पहले फारस देश में एक शहजादा रहा करता था। वैसे वह सब तरह से क़ाबिल था, मगर उसके अन्दर कायरता कूट-कूट कर भरी थी। शहजादा जब बीस साल का हुआ, तब उसका बाप मर गया। शहजादा को गद्दी पर बिठाने के लिए भारी तैयारियाँ होने लगीं।

फारस का रिवाज था कि शहजादा को गद्दी पर बैठने के पहले एक सिंह के साथ लड़ना है। वजीरों ने शहजादे के वास्ते लड़ने के लिए एक सिंह को लाकर कटघरे में तैयार रखा। कायर शहजादा जब सिंह की बात सोचने लगा तभी उसके हाथ-पैर ठण्डे पड़ गये। इसलिए वह राज्याभिषेक के एक दिन पहले ही आधी रात के वक़्त घोड़े पर सवार हो अपने मुल्क से निकल पड़ा।

तीन दिन के सफ़र के बाद शहजादा किसी दूसरे मुल्क में पहुँचा। वह मुल्क नदी-नाले, जंगल-पहाड़ और बाग-बगीचों से भरा हुआ था और देखने में बड़ा ही खूबसूरत लग रहा था। एक जगह शहजादे ने घास चरने वाली भेड़ों की एक रेवड़ देखी। उसके नजदीक एक गड़ेरिया बांसुरी बजाते मजे में बैठा दिखाई दिया।

शहजादे ने गड़रिये को पुकारा। वह शहजादे को अपने मालिक के घर ले गया। मालिक ने शहजादे को बढ़िया खाना खिलाया, तब पूछा–"आप किस मुल्क के बाशिंदे हैं? कहाँ जा रहे हैं? आपका नाम क्या है?"

"जनाब, मैं एक शहजादा हूँ। मगर मैं अपना नाम बताना नहीं चाहता। मेरे बुरे दिन आ गये, इसलिए मैं अपने मुल्क को छोड़ भटकते यहाँ पर आ गया हूँ।" उदास होकर शहजादे ने जवाब दिया।

"आप मेरे घर रह जाइये। मैं आपके वास्ते सारा इंतजाम करूँगा; आपके भी

अच्छे दिन आ जायेंगे।" किसान ने कहा। शहजादे ने किसान के मेहमान बनने को मान लिया। शहजादा रोज गड़रिये के साथ किसी जंगल में या झरने के पास आया-जाया करता था। एक दिन शहजादा गड़रिये लड़के के साथ किसी पहाड़ी तलहटी में गया। वहाँ पर कई गड़रिये अपनी भेड़ों की रेवड़ियों के साथ आ पहुँचे।

उस वक़्त दूर से यह पुकार सुनाई दी– "लो, देखो, सिंह आ रहा है।" सारे गड़रिये झट पत्थर व लाठियाँ लेकर उस पुकार की दिशा में भागने लगे।

शहजादे के साथ आये हुए लड़के ने पूछा– "चलियेजी, हम भी जाकर सिंह को मार डालेंगे।" मगर शहज़ादे का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। लड़का पल भर शहज़ादे की ओर देखता रहा, तब वह भी सिंह का शिकार खेलने चल पड़ा।

जब युवराजा थोड़ा होश में आया तब वह अपनी जान बचाने केलिए किसी पेड़ पर चढ़कर पत्तों की ओट में छिप गया। थोड़ी देर बाद गड़रिये चिल्लाते मरे हुए सिंह को अपने साथ ले लौट आये।

मरे हुए सिंह को देख शहज़ादा शर्मिंदा हो उठा। वह मन ही मन सोचने लगा– "एक गड़रिये के लड़के के अन्दर जो हिम्मत है, उस में आधी हिम्मत भी वह नहीं रखता। मरे हुए सिंह को देखने पर ही उसके हाथ पैर काँप रहे हैं। भेड़ों की रेवड़ों के चले जाने के बाद शहजादा पेड़ पर से उतर आया, किसान को अपना चेहरा दिखाने में उसे लज्जा मालूम हुई। इसलिए वह किसी दूसरी दिशा में चल पड़ा।

फ़िर तीन दिन का सफ़र तै करके शहज़ादा एक रेगिस्तान में पहुँचा। वहाँ पर उसे फ़ौजी शिविर और कई डेरे दिखाई दिये। उस शिविर के सरदार ने शहजादे का स्वागत करके उसे खाना खिलाया। सरदार को भी शहजादे ने अपना नाम तो नहीं सुनाया, मगर यही बताया कि वह एक मुल्क का शहज़ादा है, और वह दुर्भाग्य के

मारे अपने मुल्क को छोड़ भटक रहा है। "आप हमारे शिविर में एक सैनिक बनकर रह जाइये। कभी आप के दिन फ़िर आयेंगे।" सरदार ने सुझाया। शहजादे ने उनके सुझाव को मान लिया।

शहजादे के दिन आराम से कटने लगे। एक दिन सारे सैनिक घोड़ों पर सवार हो जब निकलने लगे, तब शहजादे को भी अपने साथ चलने को कहा। "आप सब कहाँ जा रहे है ?" शहजादे ने पूछा।

"समीप के पहाड़ों में सिंह हैं। हम उनका शिकार खेलने जा रहे हैं। इधर कई दिनों से कोई लड़ाई नहीं हुई, जिससे हमारी हिम्मत मंद पड़ती जा रही है। फिर से हिम्मत बटोरने के लिए शिकार खेलना एक अच्छा साधन है।" सिपाहियों ने उत्साहपूर्वक ज़वाब दिया।

शहजादे को लाचार होकर उनके साथ चलना पड़ा। मगर उसका कलेजा तेजी के साथ धड़कने लगा, क्योंकि शहजादा अपनी आत्मरक्षा के वास्ते भी सिंह के साथ लड़ने की हिम्मत नहीं रखता था। ऐसी हालत में सिंहों की खोज करके उनका शिकार खेलने वाले ये सिपाही उसकी नजर में कहीं ज्यादा हिम्मतवर मालूम हुए।

इसके बाद जब सिपाही पहाड़ों में पहुँचे, तब शहजादे ने अपने घोड़े को दूसरे रास्ते

में मोड़ लिया। कुछ दिन सफ़र करके वह एक नगर में पहुँचा। भेदियों के द्वारा उस देश के राजा ने यह जान लिया कि वह युवक एक शहजादा है जो बदक़िस्मती से अपनी गद्दी खोकर भटक रहा है। इस पर उन्होंने शहजादे को अपने महल में बुलवा भेजा, उसके साथ एक राजोचित व्यवहार किया। बताया कि उसकी हालत के सुधरने तक वह राजा का मेहमान बन कर रहे।

उस राजा के एक पुत्री थी, वह बड़ी खूबसूरत और अक्लमंद थी। अपने राज्य से वंचित शहजादे को कोई फ़िक्र न हो, इस ख्याल से राजकुमारी खुद उसकी सेवा-टहल करते उसका मन बहलाव करने लगी।

शहज़ादा जिस दिन उस देश में पहुँचा, उसी दिन शाम को खाने के बाद शहज़ादा और राजकुमारी आपस में बातचीत कर रहे थे, उसी वक़्त महल के बाहर बड़ी हलचल सुनाई दी। धड़कते दिल से शहज़ादे ने पूछा–"यह भयंकर आवाज़ कैसी ?"

"वैसे बात कोई ख़ास नहीं है। मेरे काले रंग के सेवक की जंभाई है।" राजकुमारी ने कहा।

शहज़ादे ने सोचा कि काले सेवक का मतलब शायद नीग्रो होगा। मगर उसे इस बात का आश्चर्य भी हुआ कि एक सेवक का इस प्रकार विकृत ढंग से जंभाइयां लेते हुए देखकर राजकुमारी का नाराज़ न होना कैसी बात है।

थोड़ी देर बातचीत करने के बाद राजकुमारी बोली–"अब सोने का वक़्त हो गया है। आप अपने कमरे में जाकर सो जाइये।" ये शब्द कहकर राजकुमारी ने दर्वाज़ा खोला. पर दूसरे ही पल में शहज़ादे को लगा कि उसके कलेजे की धड़कन बंद होने वाली है। दर्वाजे के पीछे एक बहुत बड़ा काला सिंह बैठा हुआ था।

शहज़ादा चिल्ला उठा–"सिंह आ गया है, सिंह।" "आप डरियेगा नहीं, क्या आप यह नहीं जानते कि ड़रने पर जंगली जानवर हम पर हमला कर बैठते हैं ? यह तो मेरा पालतू सिंह है। यह हमेशा मेरे साथ घूमता-फिरता है।" यों समझा कर राजकुमारी ने सिंह के सर पर हाथ फ़ेरा।

इस पर शहज़ादा थोड़ा संभल गया। इसके बाद राजकुमारी काले सिंह को अपने साथ ले गई।

उस दिन रात शहजादे को नींद न आई। उसने खुद अनुभव किया कि वह सिर्फ़ डर की वजह से ही आज तक परेशान है। मगर सिंहों के कारण नहीं। गड़रियों ने सिंह को मार डाला, सिपाहियों ने सिंहों का शिकार किया, राजकुमारी ने खुद सिंह को पालतू बनाया। उनके मन में

भय की पीड़ा नहीं है। सिर्फ़ उसीके मन में यह पीड़ा है। जो निडर होता है, उसका सिंह क्या, कोई भी कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

इस बात को अनुभव पूर्वक समझने के बाद शहजादा सवेरा होने के पहले ही अपने घोड़े पर सवार हो किसी से कहे बगैर अपने देश को लौट गया। इस पर वज़ीर और शहजादे के खानदान के लोग बड़े खुश हुए।

शहजादे ने वजीरों को बुलवा कर कहा– "मैं सिंह के साथ लडूंगा। इसका इंतजाम कीजिए।" दूसरे ही दिन शहजादे का सिंह के साथ लड़ने केलिए ज़रूरी इंतजाम किया गया। शहजादा भाला लेकर हिम्मत के साथ मंच पर आ खड़ा हुआ। राजकर्मचारियों ने सिंह के कठघरे को लाकर उसे बाहर छोड़ दिया।

कठघरे का किवाड़ खोलते ही सिंह भयंकर गर्जन करते हुए आगे की ओर कूद पड़ा, पर शहजादा जरा भी हिला-डुला नहीं। वह हिम्मत के साथ अपनी जगह खड़ा रहा। सिंह ने शहजादे का चक्कर लगाया। फिर उसके पास बैठ कर उस का हाथ चाटने लगा। वह एक पालतू सिंह था, लेकिन इस बात को वजीरों ने शहजादे से गुप्त रखा था। इस तरह शहज़ादे की हिम्मत की जाँच हुई।

इसके बाद शहजादे के राज्याभिषेक का इंतजाम हुआ। सब लोगों के पास निमंत्रण पत्र भेजे गये। किसान, गड़रिये, रेगिस्तान वाले सरदार, सिपाहियों, राजा और राज कुमारी के पास भी निमंत्रण पत्र विशेष रूप से भेजे गये। सब लोग उस उत्सव में हाज़िर हुए।

गद्दी पर बैठने के बाद शहजादे को सब लोगों ने भेंट व उपहार समर्पित किये। उस संदर्भ में राजा ने कहा–"मैं अपने साथ कोई भेंट और उपहार नहीं लाया। सिर्फ़ अपनी बेटी को लाया हूँ। इसे तुम स्वीकार करो।"

शहजादा से राजकुमारी के साथ विवाह किया और बहुत समय तक सुखपूर्वक राज्य किया।

# फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

**पुरस्कृत परिचयोक्तियां नवम्बर १९८२ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।**

S. B. Takalkar

★

Chandrapal Singh

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ सितम्बर १० तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियां कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें : **चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

---

## जुलाई के फोटो-परिणाम

**प्रथम फोटो : मोर पंखों से झांक रहीं आंखें!**

**द्वितीय फोटो : मैं भी ताक रहा हूं इसकी आंखें!!**

प्रेषक : **कुलदीप कुमार वर्मा,** बी/७८ माचना कॉलोनी, टी. टी. नगर, भोपाल-४६२००६

पुरस्कार की राशि रु. ५० इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

मेरे जन्म-दिन पर
भइया की भेंट...

जेब खर्च से बचाए हुए पैसे को **यूको बैंक** में
जमाकर उसने इसे खरीदा है।

उसके प्यार की निशानी यह ट्रांजिस्टर यूको बैंक की देन है।
यूको बैंक में रुपया बड़ी तेजी से बढ़ता है क्योंकि हमारे रुपयों में वह अपना
रुपया भी मिला देता है जिसे 'ब्याज' कहते हैं।

अपने जेब खर्च के रुपयों को बचाने-बढ़ाने का यह कितना अच्छा तरीका है।

UCO/CAS-109/82 HIN

PARLE
POPPINS
हरा
रुपहला
नारंगी
रुपहला
लाल
रुपहला
पीला
शकल की नकल नहीं चलेगी!
असली पॉपिन्स
अब रुपहली धारियोंवाले रैपर में मिलेंगी!
बच्चों, बिलकुल ताज़ा खबर सुनो ! अब नक्काल
तुम्हें धोखा नहीं दे पायेंगे. तुम तो बस
इतना करो, कि पॉपिन्स के रंगबिरंगे पैक
पर रुपहली धारियां देख कर तसल्ली कर लो.
बस, फिर पॉपिन्स के रसीले मज़ेदार,
फलों-से स्वाद का मज़ा लेते जाओ.
पारले
पॉपिन्स
अब
नक्कालो की चालें
नहीं चलेंगी.
everest/81/PP/101-hn